नए रास्ते

कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय में गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के कुछ सकारात्मक प्रयास

नए रास्ते

कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय में गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के कुछ सकारात्मक प्रयास

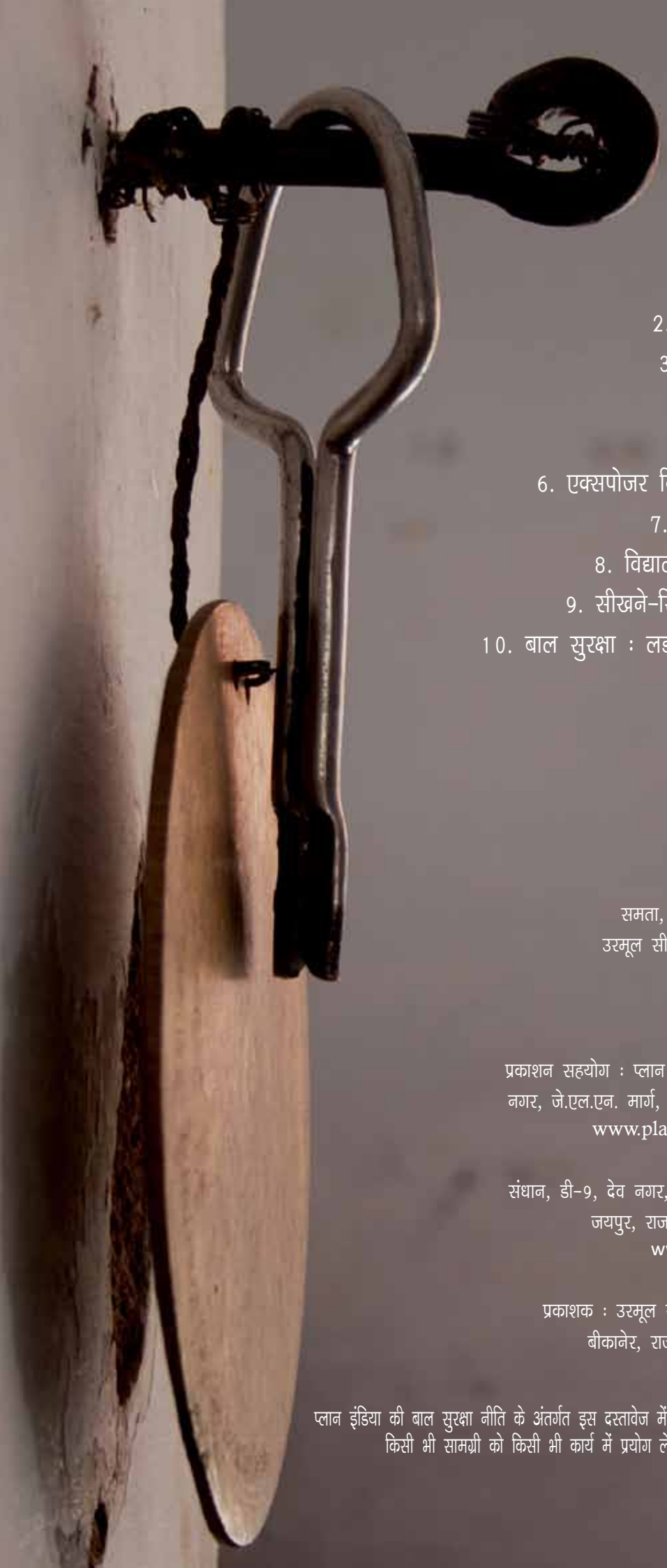

क्रम

1. प्रस्तावना
2. स्तरानुसार शिक्षण : महत्ता एवं चुनौती
3. कहानी शिक्षण : चुकती नहीं कहानियाँ
4. लाइब्रेरी ने बढ़ाया उत्साह
5. जीवन कौशल शिक्षा प्रशिक्षण
6. एक्सपोजर विजिट : गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की एक विधा
7. अपनी बात कहने का मंच : मीना मंच
8. विद्यालय प्रबन्धन समिति की सक्रिय भागीदारी
9. सीखने-सिखाने का एक अलग अंदाज चिट्ठी-पत्री
10. बाल सुरक्षा : लड़कियों की सुरक्षा हम सब की जिम्मेदारी

संधान टीम- सलमा, उषा, रघुनंदन, दलीप वैरागी
समता, हिमांशु शुक्ला, भवंर लाल शर्मा, महेश कुमार शर्मा
उरमूल सीमांत टीम- रजनी कुमारी, कीर्ति शर्मा, सुनील लहरी

प्रकाशन वर्ष : जून 2014

प्रकाशन सहयोग : प्लान इंडिया, राजस्थान स्टेट ऑफिस, एस-88, आदिनाथ नगर, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर राजस्थान, दूरभाष - 91 141 2553382
www.planindia.org, www.plan-international.org

एवम्

संधान, डी-9, देव नगर, कम्यूनिटी सेंटर के पास, कमल एण्ड कं. टोंक रोड़
जयपुर, राजस्थान-302018, दूरभाष - 91 141 2709020
www.sandhan.org, sandhan.in@gmail.com

प्रकाशक : उरमूल सीमांत समिति, पावर ग्रिड के पास, बज्जू, कोलायत
बीकानेर, राजस्थान-334305 दूरभाष - 91 1535 232034
www.urmul.org, mail@urmul.org

प्लान इंडिया की बाल सुरक्षा नीति के अंतर्गत इस दस्तावेज में सभी छात्राओं के नाम बदल दिए गए हैं। इस दस्तावेज की किसी भी सामग्री को किसी भी कार्य में प्रयोग लेने से पहले प्रकाशक की लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

1
प्रस्तावना

शिक्षा में गुणवत्ता के लिए अनेक प्रयास हो रहे हैं। आज प्रशिक्षणों व सामग्री नवाचारों के साथ-साथ सीखने की सक्रिय विधाओं का डेमोंस्ट्रेशन क्लास रूम तक पहुँच रहा है। वंचित वर्ग व ड्रॉप आउट लड़कियों के लिए कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय (केजीबीवी) गुणवत्तायुक्त शिक्षा हेतु उपयुक्त विकल्प है। इन प्रक्रियाओं को सार रूप में स्तरानुसार भूमिका, जीवन कौशल शिक्षा आदि के माध्यम से कक्षा-कक्ष में अपना कर देखा गया है। विश्लेषण एवं सीख के दौरान बालिकाओं के शैक्षणिक भ्रमण, मीना मंच की गतिविधियों एवं शिक्षा में समुदाय की भूमिका को भी महत्वपूर्ण नियोजन बिंदू की तरह शामिल किया गया है। इन विद्यालयों को आशा भरी दृष्टि से देखा जा रहा है। इन विद्यालयों में लड़कियों को समग्र शिक्षा का अवसर मिले, इस हेतु सरकारी तथा गैर-सरकारी संगठन कई तरह से सहायता कर रहे हैं। यहाँ बीकानेर केजीबीवी में प्लान इंडिया, संधान, उरमूल सीमांत समिति व सर्व शिक्षा अभियान के संयुक्त प्रयासों से की गई गतिविधियों के अनुभवों को विश्लेषित कर लिखने का प्रयास किया गया है। ये विश्लेषण केजीबीवी में कार्यरत शिक्षिकाओं, बालिकाओं तथा स्वयं प्रोजेक्ट टीम का है जिनका इन प्रक्रियाओं से सीधा जुड़ाव रहा है। इन अनुभवों में कहीं-कहीं मिली सफलता और असफलता को धरातलीय स्तर पर रखा गया है। इन अनुभवों के प्रस्तुतिकरण का मुख्य उद्देश्य आवासीय विद्यालयों में काम करने वालों के अनुभव बांटने का है।

यहाँ लिखते समय लगातार महसूस किया गया कि अभी गुणवत्ता की उम्मीद से जो प्रक्रियाएँ शुरू की गई हैं, उनकी शुरूआत भर है। शायद हमें लगातार इन प्रक्रियाओं को निखारते रहना होगा।

2
स्तरानुसार शिक्षण
महत्ता एवं चुनौती

केजीबीवी में आ रही लड़कियाँ कक्षा-6 से 8 में प्रवेश लेती हैं, पर अधिकांश की शैक्षणिक स्थिति प्रथम या दूसरे दर्जे की ही होती हैं। ऐसे ही अनुभव कई बार विद्यालय विजिट डे के दौरान होते हैं, जब कक्षा 6, 7 व 8 में पढ़ रहे विद्यार्थी लिख-पढ़ पाने में असहज महसूस करते हैं। आज स्कूल जाने और पाँच-छः वर्ष स्कूल में गुजारने के बाद भी छात्र-छात्राओं का ड्रॉप आउट हो जाने का एक कारण नहीं सीख पाने की हताशा भी है।

ऐसा मानना कि बच्चों में सीखने की प्रवृति कम हो गई है। भय खत्म हो गया है इस कारण यह स्थिति बन रही है, यह सही नहीं है। सही तो यह है कि यदि जरूरत के हिसाब से खाना खाया जाता है तो वह पचता है अर्थात् शिक्षण प्रक्रियाएँ भी जरूरत या स्तर के अनुसार घटित होती हैं तो सीखना सुनिश्चित होता है।

कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय उन लड़कियों के लिए वरदान की तरह है जो ड्रॉप आउट हैं या कभी स्कूल ही नहीं गई। इन लड़कियों की शैक्षणिक विविधता में गुणवत्तायुक्त शिक्षा एक चुनौती की तरह है। कहने को तो ये लड़कियाँ कक्षा-छह, सात व आठ में प्रवेशित हैं पर इनमें सबसे बड़ा समूह निरक्षर है। एक ही किताब के माध्यम से इन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मुहैया करवाना बेहद मुश्किल है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम की सार्थकता तब ही है जब हर विद्यार्थी को उसकी स्थिति को ध्यान में रखकर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करवाई जाए। ऐसे में जरूरी है कि बालिकाओं के साथ शिक्षण प्रक्रियाएँ स्तरानुसार हो।

आज हर तरफ गुणवत्ता हेतु स्तरानुसार शिक्षण विधाओं पर काम करने की कोशिशें हो रही हैं। टीचर्स प्रशिक्षण में स्तरानुसार शिक्षण का सत्र केन्द्र में होता है। स्कूलों में सीधे जाकर भी टीचर्स व बच्चों के साथ इस विधा पर काम किया जा रहा है। बीकानेर के पांच केजीबीवी में प्लान इंडिया के सहयोग से उरमूल सीमांत बज्जू व संधान की साझेदारी में दिसम्बर 2011 से हॉलिस्टिक एजुकेशन पर कार्य हो रहा है। इस कार्य में स्तरानुसार शिक्षण को प्रभावी बनाने के लगातार प्रयास किए जा रहे है। यहाँ स्तरानुसार शिक्षण के लिए अपनाई गई प्रक्रियाओं को शेयर किया जा रहा है।

बैंचमार्क (आगे बढ़ने का शैक्षिक आधार) : गुणवत्तायुक्त शिक्षण को सुनिश्चित करने के अनेक पड़ावों व प्रयासों में महत्वपूर्ण व प्रारम्भिक गतिविधि है बैंचमार्क। बैंचमार्क से हर लड़की की स्थिति पता लगती है। उस स्थिति के आधार पर स्तरानुसार समूह निर्धारण होता है। केजीबीवी में अब तक मुख्य दो विषयों में बैंचमार्क किया जाता रहा है। भाषा व गणित में। इन दोनों विषयों के साथ-साथ व्यक्तिगत क्षमताओं, जैसे - आत्मविश्वास, सम्प्रेषण, टीम भावना, व्यवहार आदि को भी देखा गया है। इन व्यक्तिगत क्षमताओं का आकलन लड़की की मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति व केजीबीवी में प्रबन्धन से सम्बन्धित निभाई जा रही भूमिकाओं के आधार पर होता है। भाषा व गणित में बैंचमार्क इसलिए होता है क्योंकि यह दोनों विषय ही सीखने के मुख्य औजार हैं।

स्तरानुसार बैठक व्यवस्था : स्तरानुसार शिक्षण की सहजता के लिए उसी अनुरूप बैठक व्यवस्था का होना जरूरी है। लेकिन इसका कोई निश्चित फॉर्मूला नहीं होता है। कई

बार जब बड़े समूह में चर्चा होती है तो सब एक साथ होते हैं। अवधारणा पर कार्य व अभ्यास के दौरान स्तरानुसार बैठक व्यवस्था हो तो काम में आसानी होती है। वैसे स्तरानुसार बैठक व्यवस्था टीचर्स व भवन की उपलब्धता पर निर्भर होती है। स्तरानुसार बैठक व्यवस्था अमूमन दो तरह से होती है, प्रथम एक स्तर में दो या दो से अधिक कक्षाओं की लड़कियाँ हो सकती हैं। द्वितीय कक्षा विशेष में भी स्तर के अनुसार बैठक व्यवस्था होती है।

बीकानेर जिले की पाँच केजीबीवी में बैठक व्यवस्था के दोनों ही अनुभव रहे। यहाँ इस व्यवस्था को सुदृढ़ बनाये जाने के उद्देश्य से प्लान इंडिया के सहयोग से बैठने हेतु चौकियाँ उपलब्ध कराई गई है।

समीक्षा व नियोजन हेतु साप्ताहिक बैठक : सबको साथ लेकर चलना व स्तरानुसार शिक्षण करवाने के लिए समीक्षा एवं नियोजन महत्वपूर्ण गतिविधि है। किसी भी पाठ, प्रश्नावली या मुद्दे पर काम करने के लिए जरूरी होता है कि उस मुद्दे पर गतिविधियाँ तैयार करना जिस पर

स्तरानुसार शिक्षण ने लड़कियों के सीखने में तेजी ला दी है। दामोलाई केजीबीवी में बैठक व्यवस्था व समय-सारिणी स्तर के अनुसार है जो पिछले दो वर्ष से लगातार फॉलो की जा रही है। इस विधा के सकारात्मक परिणाम सारा स्टाफ महसूस करता है।

ज्योति तँवर, शिक्षिका, केजीबीवी दामोलाई

सभी समूहों के साथ काम किया जा सके। समूह शिक्षण में सहायक सामग्री की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। एक या दो समूह को एक समय में सामग्री के साथ काम करना होता है। समूह में काम करने का एक अनुभव यह भी है कि समूह की स्थिति तेजी के साथ बदलती है अतः समूह के बदलावों को आंकना, समूह की जरूरत के हिसाब से सामग्री का निर्माण करना आदि के लिए साप्ताहिक व नियोजन बैठक होना जरूरी है। ये बैठकें पाक्षिक व मासिक भी की गई पर अनुभव यह हुआ कि

साप्ताहिक बैठक नियोजन की दृष्टि से ज्यादा महत्वपूर्ण है। बीकानेर के केजीबीवी में साप्ताहिक बैठक की शुरूआत हुई है। प्रधानाध्यापिका के नेतृत्व में इस बैठक का आयोजन होता है। बैठक में समूहों की स्थिति का अपडेशन व विषयवार नियोजन की प्रक्रिया शुरू हुई है। अभी इसे प्रभावी बनाये जाने के प्रयास हैं।

स्तरानुसार शिक्षण के कुछ उत्साहजनक अनुभव : बैंचमार्क के बाद जो स्थिति उभर कर आती है, वह स्थिति ही अपने आप में एक पुख्ता संदेश होता है कि जो जहाँ है वहाँ से काम शुरू हो। इस संदेश के साथ ये भी जिम्मेदारी होती है कि लड़कियाँ तेजी से पढ़ना-लिखना सीखें। इन दोनो कामों की नैतिक जिम्मेदारी शिक्षा तंत्र की है जिसमें शिक्षक मुख्य भूमिका में होता है। जो होना चाहिए उससे सभी इत्तेफाक रखते हैं, पर वह हो कैसे, यह सुनिश्चित कर पाना आज भी चुनौतीपूर्ण है। चुनौती होने की वजह से स्तरानुसार शिक्षण की प्रक्रिया को छोड़ा नहीं जा सकता। इसके लिए हर असफलता या थोड़ी सी सफलता के बाद फिर उसी जोश के साथ नया रास्ता ढूँढना होता है। बीकानेर के केजीबीवी में प्रोजेक्ट टीम नियमित विजिट कर केजीबीवी में स्तरानुसार शिक्षण हेतु होने वाली हर प्रक्रिया में मदद कर रही है। समय-समय पर डेमोंस्ट्रेशन कर इस विधा को लगातार मजबूत करने का प्रयास किया जा रहा है। एक-दूसरे केजीबीवी के सफल अनुभवों को शेयर करना भी इस प्रक्रिया का हिस्सा है।

सफर अभी चुनौतीपूर्ण : समूह शिक्षण के प्रति अपार विश्वास व मेहनत के बावजूद धरातल पर इस विधा का सफर अभी भी काफी चुनौतीपूर्ण है। जब भी चर्चा होती है, कहाँ कौन से केजीबीवी में स्तरानुसार शिक्षण हो रहा है तो विश्वास नहीं बनता कि कौन से केजीबीवी का नाम लिया जाए। बस ! एक टीचर या दिन विशेष का ही उदाहरण सामने होता है जब मल्टीलेवल हुआ या प्रयास किया गया। स्तरानुसार शिक्षण ही बेहतर तरीका है, समझ के बावजूद क्या अड़चनें इस विधा के क्रियान्वयन में होती है, अनुभव इस तरह से हैं -

बोलचाल के शब्द बने आगे बढ़ने का आधार

यह अनुभव केजीबीवी झझू का है। जनवरी 2013 में स्थिति अपडेशन हेतु मिड टर्म असेसमेन्ट किया गया। कक्षा-छह मे उपस्थित 22 लड़कियों में से स्तर-1, 2, 3 व 4 में क्रमशः 7, 7, 5 व 3 लड़कियाँ चिह्नित हुई। यहाँ पर स्तर 1 व 2 की लड़कियों को तेजी से लिखना-पढ़ना सिखाये जाने की जरूरत थी। स्तर-1 पर चिह्नित लड़कियाँ कुछ-कुछ सरल शब्द पढ़ती थी। स्तर -2 पर वे लड़कियाँ थीं जो शब्दों को तो पढ़ती थीं पर वाक्य पढ़ पाने में असहज थी।

यहाँ लड़कियों से चर्चा शुरू हुई - "आप अपने गांव से अन्य गांव कब-कब जाती हैं?" जवाब आने लगे। कुछ लड़कियाँ एक से अधिक बात बताने के लिए उतावली थीं। सबको मौका मिले इस हेतु एक को एक बात बताने का नियम बना लिया गया। ब्लैकबोर्ड पर लिखे वाक्यों में से कुछ इस तरह से थे- "मामा जी के जाते हैं।", "शादी में जाते हैं", "जीमने (भोजन करने) जाते हैं।", "औसर (मृत्यु भोज) में जाते हैं।", "मेले में जाते हैं।", इस प्रक्रिया में कक्षा की सभी लड़कियाँ उत्साहित थीं। बोर्ड पर लिखे गए वाक्यों में से "शादी" शब्द को बोर्ड पर लिखते हुए आगे बढ़ा गया। शादी को सुनकर कौन-कौन से शब्द दिमाग में आते हैं, बताने को कहा गया। यहाँ कहा गया कि जो शब्द बोला जा रहा है आपके द्वारा उसे ध्यान रखना है कि उसे कहाँ लिखा गया है। लगभग 25 शब्द लिखे जाने के बाद रुकने के लिए बोलना पड़ा। उदाहरण के लिए कुछ शब्द इस प्रकार थे - घोड़ा, दुल्हा-दुल्हन, बाजा, डीजे, डान्स, हल्दी, लड्डू, मेकअप, नये कपड़े, डेकोरेशन, फेरे इत्यादि। उपरोक्त प्रक्रिया में उल्लेखनीय बात यह थी कि सभी लड़कियाँ उत्साह के साथ शामिल थीं। इन शब्दों पर स्तरानुसार शिक्षण का प्रयास हुआ। जो इस तरह से था -

समूह-3 व 4 (लिखना-पढ़ना जानता था) को पाँच वर्षों में शादियों मे आये परिवर्तन पर लिखने का कार्य दिया गया। यहाँ सुनीता द्वारा लिखा लेख प्रस्तुत है- "पहले की तुलना में आज बाल विवाह कम हुए हैं। पहले शादी के लिए लड़की / लड़का घर वाले ही ढूंढ़ते थे। अब लड़के और लड़की की पसंद पूछी जाती है। आजकल शादियां गार्डन में होती हैं, पहले घर पर ही होती थी। पहले दुल्हन घूंघट निकालती थी, अब ऐसा नहीं है। आजकल हर जाति में, सम्मेलन में शादियां होती हैं। सम्मेलन में पैसा भी कम खर्च होता है। सरकार को सम्मेलन में शादी करने का कानून बनाना चाहिए।"

समूह-2 को मेहँदी, लड्डू व हल्दी पर चार-चार बातें लिखने का कार्य दिया गया। समूह-2 की लड़कियों ने शब्दों पर पांच-पांच वाक्य लिखे। उदाहरण के लिए कान्ता द्वारा लिखे वाक्य इस प्रकार थे-

हल्दी
हल्दी सब्जी में डालते हैं।
इसका रंग पीला होता है।
हल्दी मलने से रंग गोरा होता है।
मेहँदी
मेहँदी सूखने के बाद रचती है।
शादी में मेहँदी लगाते हैं।
मेहँदी पन्नी (ट्यूब) में आती है, जिससे फूल बना होता है।
लड्डू
लड्डू कई तरह के होते हैं, जैसे बूँदी के, गोंद के।
लड्डू शादियों में बनते हैं। गांवों में ज्यादा बनते हैं।
लड्डू चासनी से बनते हैं।

समूह -1 को उक्त शब्दों के क्रम बदल कर पढ़ने का अभ्यास करवाया गया। उन्हीं शब्दों में से बिना देखे पाँच-पाँच शब्द लिखने का कार्य दिया गया। इस समूह की सभी लड़कियों ने पाँच-पाँच शब्द लिखे। लिखे गए शब्दों में संयुक्ताक्षर व सरल दोनों तरह के थे। अपने परिवेश के शब्द होने से लड़कियों को लिखने में कोई कठिनाई नहीं थी। लड़कियों में अपना लिखा हुआ दिखाने की होड़ थी।

प्रोजेक्ट टीम द्वारा की जाने वाली लड़कियों के असेसमेन्ट की प्रक्रिया हमें बहुत अच्छी लगी। यूँ तो हम अपनी तरफ से बहुत प्रयास करते हैं कि लड़कियों का स्तर बेहतर हो सके किन्तु जब प्रोजेक्ट टीम द्वारा इन प्रक्रियाओं में शामिल होकर आगे की दिशा दिखाई जाती है तो काम आसान हो जाता है। इसके अलावा कंटेन्ट को लड़कियों के सामने कैसे प्रजेन्ट करना है, इसके बारे में जो सपोर्ट मिला वह लड़कियों व हमारे लिए बहुत मददगार रहा।

शम्मी भटनागर, प्रधानाध्यापिका, पूगल

- शिक्षण प्लान को नियमित गतिविधि का हिस्सा न बना पाना : स्तरानुसार शिक्षण के लिए आवश्यक हो जाता है नियमित प्लान बनाना। ऐसा नहीं होने पर गतिविधियों के अभाव में शिक्षिका फिर से बड़े समूह में एक जैसा काम करने में सहज महसूस करती है। ऐसी स्थिति में कभी तेजी से सीखने वाली लड़कियाँ तो कभी धीमी गति से बढ़ने वाली लड़कियाँ शिक्षण प्रक्रिया से विमुख हो जाती हैं।

- स्थितियों के अनुसार समूहों में बदलाव व बैठक व्यवस्था न बना पाना : स्तरानुसार शिक्षण प्रक्रिया की प्रकृति में शामिल होता है कि समूहों की स्थिति विषय व गति के अनुसार परिवर्तित होती है। इस परिवर्तन में समूहों में बदलाव व उनके अनुसार बैठक व्यवस्था में तब्दीली जरूरी है। यह सब करने के लिए शिक्षिका स्वतंत्र होती हैं लेकिन अभी इस तरह के अभ्यास भी चुनौती बने हुए हैं।
- पाठ्यक्रम पूरा न होने का भयः जब स्तरानुसार शिक्षण प्रक्रिया के महत्व पर बात होती है, शिक्षिकाओं का सीधा सा सवाल होता है, पाठ्यक्रम का क्या होगा? हालांकि गौरतलब है कि जिस लड़की को पढ़ना नहीं आया हो उसका पाठ्यक्रम पूरा भी हो जाए तो कोई तुक नहीं है। यह जानते हुए भी कि कभी पाठ्यक्रम पूरा नहीं हो पाएगा, भय इसी रूप में दोहराया जाता है।

स्तरानुसार शिक्षण के अनुभव और विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का उद्देश्य तय करते समय ही, इस तक पहुँचने की प्रक्रियाओं पर भी ध्यान दिया जाएगा। ऐसे में स्तरानुसार को बेहतरीन शिक्षण विधा के रुप में प्रतिष्ठित होने में मदद मिलेगी।

स्तरानुसार शिक्षण ने लड़कियों के सीखने में तेजी ला दी है। दामोलाई व झझू केजीबीवी में बैठक व्यवस्था व समय-सारिणी स्तर के अनुसार है जो पिछले दो वर्ष से लगातार फॉलो की जा रही है। इस विधा के सकारात्मक परिणाम को वहाँ बने शैक्षिक माहौल से महसूस किया जा सकता है।

3
कहानी शिक्षण
चुकती नहीं कहानियाँ

"सुनाई गई कहानियाँ चुक नहीं जाती उनके बीच की खाली जगहों पर सुनने वाले की कल्पना और रचना के लिए अवकाश निकलता चला जाता है।"

तेजी ग्रोवर, सन्दर्भ, मार्च-अप्रैल 2013

इन पंक्तियों को पढ़कर महसूस हुआ जो आपकी कल्पनाओं को पंख लगा दे और अपनी तरफ से कहानी में कुछ नया जोड़ने व रचने को बेताब कर दे, वाकई में वही तो है, कहानी का सत्य। यह सत्य हर उस कहानी की शुरूआत, बीच या आखिर में नजर आता है जिसे आनन्द के साथ सुना और सुनाया गया हो। कहानी सुनने का आनन्द तब ही मिलता है या उसके अर्थ की गहन अनुभूति तब ही हो सकती है जबकि सुनाने वाला भी उतना ही उत्साही व आनन्दित हो जितना कि सुनने वाला। कहानी तब ही सार्थक हो सकती है जब वह सीमित दायरों से बाहर निकल कर सुनने-सुनाने वालों को उसके आगे भी सोचने-समझने के अवसर उपलब्ध कराए।

निश्चित रूप से यही मजबूतियाँ होंगी, जिनकी वजह से आज भी शिक्षा में कहानी का अपना एक अलग वजूद है। किन्तु वर्तमान परिपेक्ष में चाहे घर हो या स्कूल सब कहानी से दूरी बनाए हुए हैं। जिसकी वजह से अब ना तो बच्चों की कहानी सुनने-सुनाने की जिद आती है और ना ही उत्साह। स्कूलों में भी कमोबेश यही स्थिति है।

आमतौर पर शिक्षक कहानी को पाठ्यक्रम पूरा करवाने की एक जरूरत भर मानकर सुनाता है और अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो जाता है। समूह तक कहानी विधा कैसे पहुँचे, इसे शिक्षण प्रक्रिया से कैसे जोड़ें? कहानी को किसी विषय विशेष या अपने संदर्भ में कैसे जोड़ा जाए? इससे शिक्षक या कहानी सुनाने वाले का कोई लेना-देना नहीं होता। कहानी में मौजूद मजबूत पहलुओं को देखते हुए संधान, प्लान व उरमूल सीमांत द्वारा बीकानेर जिले की केजीबीवी में कहानी विधा पर काम करते हुए शिक्षण प्रक्रिया को सरल व आनन्ददायी बनाने का प्रयास किया गया। लड़कियों को कुछ शब्द देकर उन पर कहानी बनाना, कहानी का अन्त लड़कियों से लिखवाना या कहानी की शुरूआत करवाना, एक कहानी से अन्य कहानी बनाना, चित्र को देखकर कहानी बनाना, जैसी प्रक्रियाओं को अपना कर देखा गया। शुरूआत में लड़कियों के स्तर को देखते हुए कुछ चुनिन्दा कहानियों को ही उनके बीच रखने का प्रयास किया गया। किन्तु जैसा कि कहानियों का स्वभाव है वे सब के साथ सहज ही अपना रिश्ता बना लेती हैं। यहाँ भी लड़कियों ने कहानी सुनने में बहुत ही उत्साह से भाग लिया। एक ऐसा ही अनुभव यहाँ साझा किया जा रहा है। जबकि लड़कियाँ कहानी सुनने के बाद सहज ही विषय से जुड़ी और अपनी कल्पनाओं के आधार पर विषय से इतर जाकर भी सोचा-समझा।

केजीबीवी से पूर्व जिस स्कूल में थी वहाँ कोर्स की किताबों के साथ शिक्षण करते थे। ऐसी स्थिति में कुछ समझ लेते थे, कुछ नहीं। जो नहीं सीखते थे, उनके बारे में, मैं मानती थी कि बच्चों की ही कमी है। यहाँ केजीबीवी में स्तरानुसार विधा पर कार्य किया तो विश्वास बना कि हर विद्यार्थी सीख सकता है।

राजलक्ष्मी, अध्यापिका, झझू

मोरु एक पहेली

केजीबीवी कक्कू में विजिट के दौरान हिन्दी विषय में लड़कियों की शैक्षिक स्थिति के बारे में जाना गया। पता चला लड़कियाँ खूब बोलती हैं, खेलती हैं किन्तु जब भी विषय सम्बन्धित कुछ पढ़ती लिखती हैं तो उनमें कोई उत्साह नजर नहीं आता। विषय के अतिरिक्त हर गतिविधि में बढ़-चढ़ कर भाग लेने वाली लड़कियाँ विषय से क्यों कतराती हैं? इस बात ने सोचने पर मजबूर कर दिया कि आखिर क्या वजह है जिसने इनका उत्साह खत्म कर दिया है। कहीं शिक्षण प्रक्रिया में ही कोई चूक तो नहीं हो रही, जिसकी वजह से लड़कियों व शिक्षिकाओं, दोनो का ही विषय विशेष में रुझान खत्म होता जा रहा है।

ऐसे में अचानक ख्याल आया 'मोरू एक पहेली' शीर्षक से छपी एक किताब का। इसमें एक छात्र की स्थिति और शिक्षक द्वारा किया गया व्यवहार व शिक्षण प्रक्रियाओं का बखूबी चित्रण किया गया है। यह कहानी यहाँ की स्थिति से मेल खाती प्रतीत हुई। सभी लड़कियों को एक साथ यह कहानी सुनाई गई। प्रयास यह किया गया कि हर लड़की कम से कम यह कहानी सुने तो जरूर। इसके लिए कहानी सुनाने के दौरान लड़कियों से बीच-बीच में प्रश्न भी किए गए। एक-दो पन्ने पढ़ने के बाद बीच में रुक कर जाना गया कि आगे क्या हुआ होगा, जरा सोचकर बताइये या क्या कभी आपकी स्थिति भी मोरू जैसी हुई है? इस पूरी प्रक्रिया में शिक्षिका की भी सक्रिय भागीदारी रही।

लड़कियाँ हर एक प्रश्न का अपनी कल्पना से तुरन्त जवाब दे रहीं थीं। जब कहानी के बीच में लड़कियों से पूछा गया कि क्या आपके साथ भी ऐसा हुआ है। जब आपका कक्षा में जाने का मन ना किया हो। इस पर सभी लडकियाँ एक साथ बोली एक बार क्या कई बार ऐसा होता है लेकिन पढ़ना तो पड़ता ही है। अच्छा, क्यों होता है ऐसा जब आपका कक्षा में जाने का मन नहीं करता है? इस पर लड़कियों का कहना था कि बहुत सी बातें है, क्या-क्या बताएँ, कभी-कभी तो स्कूल में ही मन नहीं लगता, उसके बावजूद कक्षा में जाकर बैठना पड़ता है। इसके अलावा जब बेमन से कक्षा में बैठते हैं तो पढ़ाया हुआ याद भी नहीं होता है। टीचर सवाल पूछते हैं और हम जवाब नहीं दे पाते तो सुनने को मिलता है, जब कक्षा में पढ़ाया जा रहा था तो ध्यान कहाँ था? मन लगाकर पढ़ा करो।

लड़कियों से कहानी के दौरान फिर पूछा गया - "आप क्या सोचती हैं पढ़ाने का तरीका कैसा होना चाहिए। इस बार कहानी से जुड़े हुए जवाब मिले 'बच्चो को डराकर नहीं पढ़ाना चाहिए, जैसे मोरू के दूसरे टीचर जी थे, सबको वैसा व्यवहार करना चाहिए ताकि किसी को स्कूल नहीं छोड़ना पड़े।' लड़कियों को जब कहानी की किताब में बनाए गए अंक दिखाये गये तो उनका आनन्द और भी बढ़ने लगा। कभी मोरू को डांटते हुए टीचर की मुद्रा और कभी घुंघरुदार बालों वाले गुस्सैल मास्टर जी की तस्वीर, कभी टूटी ईंटों से जोड़ लगाता मोरू और आखिर में मोरू से ही आरोही-अवरोही संख्याओं को सीखने में मशगूल बच्चों को देखकर लड़कियाँ बहुत उत्साहित थी। कहानी के अंत तक यही रोचक सिलसिला चलता रहा। लड़कियों को कहानी बहुत पसन्द आई। जब कहानी खत्म हुई और लड़कियाँ कक्षा से बाहर आईं तो कुछ लड़कियाँ सीढ़ियों पर चढ़कर बिलकुल वैसे ही बाय कर रही थी जैसे मोरू अंकों को किया करता था। उन्हें ऐसा करते देख लगा यह पहेली भी अब सुलझने लगी है।

सवाल-जवाब की यह सहज प्रक्रिया और कहीं न कहीं इससे लड़कियों को दिया जाने वाला माना, शायद यही वे कारण हो सकते हैं जो उन्हें कहानी से जुड़ने को उत्साहित कर रहे थे। वे मोरू के चरित्र से इतना जुड़ गई थी कि उन्होनें पूरी कहानी को बहुत ही ध्यान लगा कर सुना। यहाँ इस बात का भी पूरा ख्याल रखा गया कि शिक्षिका इस पूरी प्रक्रिया से जुड़े और उन मुद्दों पर स्पष्ट हो सके जिनकी वजह से लड़कियों के उत्साह में कमी आ रही थी।

शिक्षिका के साथ मिलकर लड़कियों को स्तरानुसार कार्य भी करने को दिया गया ताकि प्रत्येक लड़की इस प्रक्रिया से जुड़ सके। स्थिति साफ हो चुकी थी। जिस स्तर पर लड़कियाँ है, वहाँ से सीखने-सिखाने के प्रयास नहीं किए जा रहे थे। इसलिए लड़कियों का विषय-विशेष में उत्साह नहीं बन पा रहा था। जैसे ही एक सरल सी कहानी उनके अनुभव से जुड़ी उनके उत्साह के चलते सीखने-सिखाने का बेहतर साधन बन गई और इसी दौरान कहीं न कहीं हमारे बीच सहज रिश्ते की शुरूआत भी हो गई।

यहाँ यह बात गौर करने की है कि कहानी से कभी बोझा ढ़ोने का आग्रह नहीं किया जाता। यदि सुनने वाले का मन प्रसन्न हो तो सुनाने वालों के लिए सुनने वालों की आँखों की चमक व हुंकार मात्र ही पर्याप्त है। अर्थ तो जीवन भर खुलते रहेंगे। यदि सुनने-सुनाने में आनन्द का संचार होता है तो अर्थ की अनुभूति तो किसी भी क्षण प्रस्फुटित हो उठती है।

यहां व्यक्तिगत यह भी महसूस हुआ कि सवाल '' कक्षा में नहीं जाने का मन कब नहीं होता'' पर लड़कियों की बेबाक प्रतिक्रिया जीवन कौशल प्रशिक्षण में मिले अभ्यासों का परिणाम है

4
लाइब्रेरी ने बढ़ाया उत्साह

अक्सर देखने में आता है कि स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे अपने कोर्स या कक्षा की किताबों की अपेक्षा कॉमिक्स, कहानियाँ व मैगज़ीन पढ़ने के लिए लालायित रहते हैं। इन किताबों के प्रति उनका आकर्षण उन्हे छुप-छुप कर भी पढ़ने को मजबूर कर देता है। बचपन में भले ही परीक्षाएँ चल रही हों लेकिन यदि कोई अच्छी सी कहानी की किताब या कॉमिक्स, हाथ मे आ जाती थी तो जबरन उसे पढ़ने को मजबूर हो जाया करते थे। ऐसे में घर वालों या टीचर्स की डाँट भी रस मोह को नहीं तोड़ पाती थी।

आखिर ऐसा क्या है जो ये किताबें इतनी रूचिकर लगती हैं? शायद उन्हें बच्चों की पाठ्य पुस्तकों के साथ रख कर देखें तो इस सवाल का जवाब भी खुद-ब-खुद मिल जाएगा। एक तरफ है पाठ्य-पुस्तकों की दुनिया, जहाँ क्लिष्ट भाषा में लिखी गई ज्ञान की बातें हैं, जो उन्हें परीक्षा की तैयारी के लिए जरूरी खुराक की तरह गटकनी है। बेशक इनमें उन्हें अच्छी लगने वाली कहानियाँ, चित्र और कविताएँ भी हैं लेकिन पढ़कर याद रखने की बाध्यता इन्हें रसहीन बना देती है। दूसरी तरफ है रंग-बिरंगे चित्रों से सजी, सरल सहज भाषा में लिखी ये किताबें जहाँ है उनकी रूचि के अनुसार ढेर सारी कहानियाँ, कविताएँ चुटकुले और साथ ही ढेर सारी विविध प्रकार की जानकारियाँ। इस रंगीन दुनिया में वे बिना किसी डर के सैर कर सकते हैं, जहाँ से चाहें शुरू करें और जहाँ मर्जी हो रोक दें। शायद यह पढ़ने का आनन्द ही उन्हें स्वतः अपनी ओर खींचता है।

स्कूल में भी पढ़ने का यह आनन्द ऐसे ही बना रहे शायद इसी विचार से विद्यालयों में भी पुस्तकालय की स्थापना की गई है। खासतौर पर कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों में तो अनिवार्य रूप से पुस्तकालय विकसित किए जाने पर जोर दिया गया है। इसके लिए गाइडलाईन में आवश्यक दिशा निर्देश दिये गए हैं। साथ ही सर्व शिक्षा अभियान द्वारा समय-समय पर किताबें भी उपलब्ध करवाई जाती रही हैं जिससे कि वहाँ पर पुस्तकालय को और सुदृढ़ किया जा सके।

केजीबीवी की लाइब्रेरी : केजीबीवी में कार्य के दौरान विचार आया कि क्यों न हम विद्यालय में उपलब्ध पुस्तकालय की इस सुविधा का उपयोग करें। जिन किताबों को पढ़ने के लिए आप और हमने बचपन में छिपते-छिपाते मौके खोजे होंगे, उन किताबों को सीखने-सिखाने के एक माध्यम के तौर पर लेते हुए शिक्षण को रोचक और आनन्ददायी बनाने का प्रयास करें।

यह विचार ही हमें केजीबीवी की लाइब्रेरी तक खींच कर ले गया। लेकिन वहाँ जाकर देखा तो लाइब्रेरी के नाम पर वहाँ पूरी तरह व्यवस्थित रूप से जमी हुई एक अलमारी है। इसमें कई महापुरूषों की जीवनी, शब्दकोश, स्वास्थ्य व विभिन्न प्रकार की जानकारी से सम्बन्धित किताबें थीं। शिक्षिकाओं ने किताबों का रिकॉर्ड रखने के लिए पुस्तकों के लेन-देन का एक रजिस्टर भी बना रखा था। इसे देखने पर साफ लग रहा था कि लड़कियों में लाइब्रेरी की किताबों के प्रति खास रूचि नहीं है। कभी-कभी इक्का-दुक्का लड़की ही लाइब्रेरी से पढ़ने के लिए किताबें ले जाती है। स्थिति तो सामने थी पर कारण समझ में नहीं आया कि आखिर लड़कियों में इन किताबों के प्रति इतनी अरूचि कैसे हो सकती है? शिक्षिकाओं से बात करने पर पता चला कि बहुत सी लड़कियाँ तो पढ़ना ही नहीं जानती हैं और जो जानती हैं उनको कोर्स का भार

बहुत होता है इसलिए लड़कियाँ ज्यादा किताबें नहीं लेती हैं। अगर कोई लड़की लेना चाहे तो हम मना नहीं करते बस वो किताबें फाड़ नहीं दे इसलिए ताले में रखते हैं आखिर हमें भी तो रिकॉर्ड के अनुसार सारी किताबों का हिसाब रखना होता है ना।

हुई थोड़ी हलचल : यह स्थिति पाँचों केजीबीवी में लगभग समान सी थी। हमारे सामने सवाल यह था कि ऐसा क्या किया जाए जिससे लाइब्रेरी की किताबों के प्रति लड़कियों और शिक्षिकाओं में व्याप्त यह धारणा टूटे कि ये किताबें मात्र खाली समय में पढ़ने के लिए नहीं हैं। इनके माध्यम से सीखने की प्रक्रिया को गति दी जा सकती है। लाइब्रेरी की स्थिति देखने पर पता लगा कि वहाँ रखी गई किताबें जानकारी बढ़ाने की दृष्टि से ठीक हैं लेकिन लड़कियों के स्तर के अनुसार कुछ छोटी और रोचक किताबें भी होनी चाहिए। अतः प्रोजेक्ट के सहयोग से पाँचों केजीबीवी में डिक्शनरी, एटलस, डायरी बुक व रंगीन चित्रों वाली लगभग 250 किताबों का सैट उपलब्ध करवाया गया। इन किताबों में विभिन्न प्रकार की कहानियाँ, घटनाएँ, जीवनी व वैज्ञानिक सोच पर प्रयोग व कई प्रकार की जानकारियाँ सरल और सहज भाषा में है। साथ ही हर किताब हिन्दी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में है। जब ये किताबें लड़कियों के बीच पहुँची तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। किसी ने दो-तीन तो किसी ने आठ-दस किताबें एक ही दिन में पढ़ डाली। न सिर्फ लड़कियाँ बल्कि शिक्षिकाएँ भी किताबें पढ़ने में व्यस्त नज़र आ रहीं थी। टीम के साथियों ने तय किया कि शिक्षिकाओं के साथ मिलकर इन किताबों के साथ कुछ गतिविधियाँ आयोजित की जाएँ जिससे कि उनका भी इस प्रक्रिया के प्रति विश्वास बने।

प्रोजेक्ट टीम के सहयोग से हम लड़कियों को गुणवत्तायुक्त शिक्षा दे रहे हैं। शैक्षणिक व सहशैक्षणिक गतिविधियों से जुड़ने के बाद लड़कियों की अभिव्यक्ति बहुत अच्छी हुई है। अभिव्यक्ति मजबूत होने के कारण ही लड़कियाँ 'आओ-देखो-सीखो' व मीना मंच राज्य स्तरीय सम्मेलन जैसी प्रतियोगिताओं में भाग ले रही हैं और एक बड़े मंच पर अपनी बात खुल कर सबके सामने कह पा रही हैं।

राजबाला, अध्यापिका, पूगल

अनूठी कहानियों से प्रेरित

लाइब्रेरी में है अपनी किताब

केजीबीवी की लाइब्रेरी में एक किताब थी जिसका शीर्षक था- कौए की सूझ-बूझ। इस किताब में वही कहानी थी जिसे हम सभी सुनते-सुनाते आए हैं, एक प्यासा कौआ, पानी का घड़ा और उसकी तरकीब। लेकिन इस किताब में इसे थोड़ा अलग अंदाज से प्रस्तुत किया गया था। अतः लड़कियों को यह कहानी सुनाने का मन बना कर सबको इकट्ठा किया गया। कहानी का नाम सुनते ही लड़कियाँ खुश हो गईं लेकिन जैसे ही कहानी शुरू की सब लड़कियाँ कहने लगीं कि यह कहानी तो हमें आती है। लड़कियों को पूरी कहानी सुनाई गई। इस कहानी में कौए ने पानी पीने के लिए कंकड़ का इस्तेमाल नहीं किया। फिर उसने कैसे पानी पीया होगा? आप सोच कर बताइए। थोड़ी देर तो लड़कियों में चुप्पी सी छाई रही लेकिन फिर वे एक के बाद एक विकल्प सुझाने लगीं। शिक्षिका यह देखकर हैरान थी कि जो लड़कियाँ अक्सर कक्षा में चुपचाप बैठी रहती थी वे भी आगे बढ़ कर बोल रही थीं। लड़कियों ने तरह-तरह की अटकलें लगाईं लेकिन वे जानना चाहती थीं कि किताब मे क्या तरकीब दी है। अतः एक लड़की को किताब देकर उसका अंत पढ़कर सुनाने को कहा गया।

उसने पढ़कर बताया कि कौए ने पास के घर के कूड़ेदान में पड़ी 'स्ट्रा' के जरिये पानी पीया। यह सुनकर सभी लड़कियाँ आश्चर्यचकित थी। सभी को लग रहा था कि हमने ऐसे क्यों नहीं सोचा। यह कहानी उन्हें बहुत अच्छी लगी। थोड़ी ही देर में लड़कियों ने अपनी ड्राईंग बुक में इस कहानी को चित्रो के रूप में उकेरना शुरू कर दिया। गतिविधि के दौरान लड़कियों का उत्साह और इसके साथ शुरू हुई सोचने की प्रक्रिया को देखकर शिक्षिका मंजू पारीक बहुत प्रभावित हुई।

लाइब्रेरी की किताबों ने लड़कियों की कल्पनाशीलता को एक नया ही आयाम दे डाला। हुआ यूं छुट्टी का दिन था अतः लड़कियों को लाइब्रेरी से मनचाही किताब चुनने को कहा गया। जिसने जो किताब ली थी उसे दूसरे दिन प्रार्थना सभा में उसके बारे में सबको बताना था। लड़कियाँ किताबों को लेकर व्यस्त हो गईं। देर रात तक उनके पढ़ने-पढ़ाने का यह सिलसिला चलता रहा। सुबह सभी लड़कियाँ तैंयार थीं अपनी किताब के बारे में बताने को। जब प्रस्तुति देने की बारी आई तो लड़कियों में होड़ सी थी कि पहले मैं बताऊँ। शिक्षिकाएँ भी उनके उत्साह को देखकर काफी खुश थीं। अतः इस प्रकिया को आगे बढ़ाने का निर्णय लिया गया।

लड़कियों को चार अलग-अलग समूह में बाँट कर कुछ शब्द दिये, उन्होंने इन शब्दों के आधार पर कहानियां तैयार की। दोनों शिक्षिकाएं भी इस गतिविधि में शामिल थी। उनके द्वारा दिये गये सुझाव ने इस प्रक्रिया को एक नया मोड़ दे दिया। सुझाव था कि चारों समूहों में जो कहानियाँ बनाई गई हैं, उन्हें एक किताबिया का रूप दिया जाये। यह बात सुनकर लड़कियाँ उछल पड़ी। शिक्षिकाओं ने आवश्यक सामग्री, जैसे - रिम पेपर, कलर, स्कैच पैन आदि उपलब्ध करवा दिये। लड़कियाँ बड़े उत्साह से जुट गई अपनी किताबिया बनाने में। पूरे प्रांगण में रंग, कागज और लड़कियाँ नजर आ रहीं थीं। दोनों शिक्षिकाएँ भी पूरे उत्साह से इस गतिविधि में लड़कियों के साथ शामिल थी। किताबिया को सुन्दर रूप देने के लिए वे लड़कियों के साथ मिलकर काम कर रही थी। इस प्रकार चारों समूहों ने चार अलग-अलग किताबिया तैयार की। इसमें थी लड़कियों की कल्पना से उपजी एक सुन्दर सी कहानी जिसे उन्होंने आकर्षक चित्रों के साथ प्रस्तुत किया था।

प्रोजेक्ट टीम के साथियों ने इन किताबों को अन्य केजीबीवी की लड़कियों के साथ भी साझा किया। भले ही यह किताब छोटी सी थी लेकिन इसे देखकर लड़कियों में छिपी अपार संभावनाओं को समझा जा सकता है। लड़कियाँ अपने द्वारा तैयार किताबिया को लेकर बहुत उत्साहित हैं। अब यह किताबिया उनकी लाइब्रेरी का हिस्सा है।

सीखने में मददगार बनी लाइब्रेरी : लाइब्रेरी की किताब के साथ शुरू हुई पढ़ने-पढ़ाने की इस आनन्ददायी प्रक्रिया का सबसे ज्यादा फायदा उन लड़कियों को हुआ जो अभी पढ़ना-लिखना सीख ही रहीं थीं। इन रंगीन चित्रों से सजी किताबों में मोटे अक्षरों में लिखी सरल सहज भाषा के साथ वे आसानी से जुड़ पा रहीं थीं। यहाँ उन्हें क, ख, ग और मात्राओं की पहचान की जगह सीधे शब्द दिख रहे थे और साथ ही उससे सम्बन्धित चित्र भी। यह चित्र उन्हें आसानी से पास में लिखे शब्द को समझने में मदद कर देते। वे इन किताबों को उलटती-पलटती, पढ़ने का अभ्यास करती। समझ न आने पर सहेली की मदद भी ली जाती। कक्षा-कक्ष के बाहर चल रही इस प्रक्रिया और अभ्यास ने उनकी सीखने की गति को तेज करने में मदद की है। शिक्षिकाओं ने भी इस बदलाव को महसूस किया है।

कम हो रहा है अंग्रेजी का डर : लाइब्रेरी के प्रति उनकी बढ़ती हुई रूचि का असर उनकी शैक्षणिक प्रक्रियाओं में भी दिखने लगा है। खासतौर पर अंग्रेजी विषय के प्रति उनका डर कम हो पाया है। जो लड़कियाँ अंग्रेजी पढ़ना नहीं जानती थीं, और अंग्रेजी के नाम से ही घबराती थीं उन्होंने जब एक ही किताब को हिन्दी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में देखा तो वे दोनों किताबों को सामने रखकर खोलकर बैठ गईं पहले अंग्रेजी की किताब में देखती हुई धीरे-धीरे कुछ बुदबुदाती फिर हिन्दी की किताब में देखकर जोर-जोर से पढ़ने लगतीं। इससे यह तो स्पष्ट था कि वे अंग्रेजी सीखना चाहती हैं, जरूरत थी तो बस उनका थोड़ा-सा साथ देने की। केजीबीवी जैतासर में अंग्रेजी शिक्षण के दौरान आए कठिन शब्दों के अर्थ ढूँढने के लिए लाइब्रेरी में उपलब्ध डिक्शनरी को आसानी से देखा गया। अब जब भी उन्हें जरूरत होती है तो वे इस शब्दकोश की सहायता से स्वयं शब्दों के अर्थ खोज लेती हैं।

बदलने लगा है स्वरूप : लाइब्रेरी की किताबों के साथ की गई छोटी-छोटी गतिविधियों ने लड़कियों और लाइब्रेरी के बीच नजदीकियों को बढ़ाने का काम किया है। अब ये किताबें शिक्षण प्रक्रिया का हिस्सा बनने लगी हैं। शिक्षिकाएँ अब इस धारणा से बाहर आ चुकी हैं कि

लाइब्रेरी की किताबें खाली समय बिताने के लिए नहीं बल्कि इनके माध्यम से शिक्षण में रोचकता और मजबूती लाई जा सकती है। किताबों के फट जाने की परवाह नहीं करके खुद लड़कियों को ज्यादा से ज्यादा किताबें पढ़ने को प्रेरित करने लगी हैं। केजीबीवी में शिक्षिकाओं ने लाइब्रेरी के प्रबन्धन की जिम्मेदारी भी लड़कियों को दे दी है। लड़कियाँ खुद अपनी लाईब्रेरी को संभालती हैं। किताबों का लेन-देन करती हैं। अब वे जब चाहें तब किताबें ले सकती हैं। रात को बिस्तर में बैठकर एक-दूसरे को अपनी कहानियाँ सुनाती हैं। कभी-कभी तो आपस में मिलकर उस पर नाटक भी रच लिया जाता है जिसे अगले दिन प्रार्थना सत्र में प्रस्तुत किया जाता है।

इसके लिए शिक्षिकाएँ भी उन्हें लगातार प्रोत्साहित करती हैं। शिक्षिकाओं ने लाइब्रेरी में उपलब्ध किताबों को अलग-अलग विषयों के आधार पर वर्गीकृत किया है जिससे कि वे विषय पढ़ाते समय भी सन्दर्भ सामग्री के तौर पर उनका प्रयोग कर सकें। शिक्षिकाएँ अब अपनी लाइब्रेरी को और विकसित करने के तरीके खोजने की प्रक्रिया में हैं। वे इसे ई-लाइब्रेरी के रुप में विकसित कर पढ़ाने की प्रक्रिया का हिस्सा बनाने के बारे में सोचने लगी हैं। केजीबीवी में लाइब्रेरी के इस बदलते हुए स्वरुप ने माहौल को जीवन्त बनाने में मदद की हैं। आशा है ये बदलाव जल्दी ही राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढाँचा-एन.सी.एफ. 2005 में की गई सक्रिय एवं आनन्ददायी शिक्षण की परिकल्पना को पूरा करने में मदद करेगा।

उल्लेखनीय है कि केजीबीवी में शैक्षिक स्तरों का जो वैविध्य है, उसमें सब सीखे व तेजी से सीखे इसके लिए रंगीन, मोटे फांट वाली व चित्रों वाली किताबें महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

आवाजें

हम खुद भी जो बातें आज तक कहने में हिचकते थे, प्रशिक्षण के दौरान सहजता से कह पाए। प्रशिक्षण के दौरान ऐसी बातों के बारे में सीखने को मिला, खासतौर से स्वास्थ्य के बारे में जो हम इस उम्र तक (अपने आप की ओर संकेत करते हुए) पहुँच जाने पर भी नहीं जानते थे। लड़कियाँ भी अपनी उम्र के अनुसार जो महसूस करती है उन्हें बता नहीं सकतीं। यहाँ उन्हें अपनी बात खुल कर कहने का मौका मिला है।

विनोद, वार्डन, केजीबीवी, जैतासर

रीति-रिवाज वाला सत्र बहुत ही अच्छा लगा। हम भी आज तक बिना सोचे-समझे वर्षो से चली आ रही परम्पराओं को निभाते चले आ रहे हैं। इस प्रशिक्षण में इन सबके बारे में सोचने का अवसर मिला।

विजयलक्ष्मी, केजीबीवी, कक्कू

प्रशिक्षण की सबसे महत्वपूर्ण एवं अच्छी बात लगी कि इसमें सोचने का अवसर देने की प्रक्रिया शामिल थी। लड़कियों को कुछ कहानियाँ व स्थितियाँ देकर सोचने के लिए प्रेरित करना प्रभावशाली लगा। इसके द्वारा लड़कियाँ स्वयं करके सीख रहीं थीं। इस तरह से सिखाना रोचक व स्थायी तो होगा ही, कहीं अधिक जीवन्त भी होगा।

ज्योति तँवर, शिक्षिका, केजीबीवी, दामोलाई

इस प्रशिक्षण में मैंने रिश्तों के बारे में जाना। मुझे लगता है हमें ऐसे दोस्त बनाने चाहिए जो हमें गलत काम करने से रोकें।

भावना, कक्षा-8, केजीबीवी, पूगल

प्रशिक्षण में सबसे अच्छी बात यह सीखी कि हमारा कितना भी प्यारा दोस्त क्यों न हो, अगर वो हमें गलत काम करने के लिए प्रेरित करे तो हमें ना कहने की हिम्मत रखनी चाहिए।

रचना, कक्षा-8, केजीबीवी, जैतासर

5
जीवन कौशल प्रशिक्षण

जिन्दगी को बेहतरी से जीने के लिए कुछ बुनियादी कौशल की जरुरत होती है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य भी यही है कि जीवन के व्यवहारगत पक्षों जैसे-संवदेनशीलता, संप्रेषण, मदद लेने-देने का जज्बा आदि का विकास हो। वर्तमान परिदृश्य में इन पक्षों पर और अधिक मजबूती से काम करने की जरुरत है। किताबी ज्ञान पर आधारित यह शिक्षा जिन्दगी की चुनौतियों का सामना करने का सामर्थ्य नही देती, जबकि जिन्दगी को बेहतरी से जीने के लिए किताबी ज्ञान से ज्यादा व्यावहारिक ज्ञान की जरूरत होती है।

स्कूलों में विषयगत शिक्षण करवाने पर जोर दिया जाता है किन्तु व्यावहारिक ज्ञान के नाम पर सिर्फ अनुशासित व्यवहार ही नजर आता है। बच्चों को गत पक्षों पर व्यवहार को मजबूत करने के अवसर संभवतः मिलते ही नहीं। इसलिए यह जरूरत निकल कर आती है कि विद्यालय शिक्षा में जीवन कौशल को भी शामिल करना चाहिए जिससे कि बच्चे शिक्षा को अपने व्यवहार में भी उतार सकें।

केजीबीवी में जीवन कौशल शिक्षा पर काम करना आसान : जीवन कौशल शिक्षा की प्रक्रिया में कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विधालयों को बहुत ही आशा भरी नजरों से देखा जा रहा है। यहाँ पढ़ने वाली लड़कियों के साथ उक्त मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की जा सकती है और निरन्तर उसका फोलोअप भी किया जा सकता है। संधान बीकानेर जिले की पाँच केजीबीवी में गुणवतायुक्त शिक्षण का काम कर रहा है। संधान द्वारा अब तक सीधे-सीधे किशोर-किशोरियों के साथ कई जीवन कौशल शिक्षा प्रशिक्षण आयोजित किए जा चुके हैं। किशोरवय के साथ काम करने के दौरान रहे अनुभवों के आधार पर यह सहमति बनी कि केजीबीवी में भी जीवन कौशल प्रशिक्षण आयोजित किये जाएं। उल्लेखनीय है कि अब तक किए गए प्रशिक्षणों के अनुभव यही रहे हैं कि एक समूह विशेष को प्रशिक्षण दे दिया जाता है जिसे कि अन्य लोगों को प्रशिक्षित करना होता है। स्कूलों में भी यही स्थिति नजर आती है।

जब भी स्कूली बच्चों के लिए कोई विषय-वस्तु या जीवन कौशल शिक्षा जैसी चीज तैयार की जाती है तो उसे बच्चों तक पहुँचाने का महज एक ही जरिया इस्तेमाल किया जाता है कि शिक्षकों को प्रशिक्षित कर दिया जाए और शिक्षक वापस जाकर बच्चों को प्रशिक्षित करें। इसी सोच के तहत उरमूल व संधान ने मिलकर केजीबीवी शिक्षिकाओं के लिए जीवन कौशल शिक्षा प्रशिक्षण आयोजित किया जाना तय किया ताकि शिक्षिकाएँ इसके बाद लड़कियों के साथ जीवन कौशल से जुड़े मुद्दों पर आसानी से बात कर सकें।

प्रशिक्षण केजीबीवी में जाकर सीधे लड़कियों के साथ ही किया जाए। इस पर सबकी सहमति बनी। चूंकि सिर्फ केजीबीवी में प्रशिक्षण करवाए जाने के पीछे भी एक सोच निहित थी कि जीवन कौशल मुद्दों पर लड़कियों के साथ डेमोंस्ट्रेशन होगा तो शिक्षिकाओं का भी काम करने का आत्मविश्वास बढ़ेगा। साथ ही कोई भी गतिविधि हो अंततः अपेक्षा यही रहती है कि इसका सीधा-सीधा फायदा लड़कियों को मिले। इस निर्णय से सीधे लड़कियों के साथ काम करने का अवसर मिला और उन्हें जानने का भी। शिक्षिकाओं ने खुद इस बात को स्वीकार किया कि "स्वास्थ्य व जेण्डर" जैसे विषयों पर उनकी समझ

पुख्ता हुई है। अब तक उन्हें यह झिझक बनी रहती थी कि लड़कियों के साथ इन मुद्दों को कैसे ट्रांजेक्ट करें? प्रशिक्षण के दौरान निरन्तर साथ जुड़ कर काम करने से यह स्पष्ट हुआ है कि जिन मुद्दों को विषय के इतर मानकर छोड़ दिया जाता था उन पर चर्चा करना कितना जरूरी है।

प्रशिक्षण की सफलता में रमसा का सहयोग : प्रशिक्षण के दौरान केजीबीवी पूगल में यह स्थिति सामने आई कि लड़कियाँ समूह में रहकर तो प्रत्येक गतिविधि में भागीदारी निभा रहीं थीं किन्तु अकेले कुछ भी अभिव्यक्त नहीं कर पा रहीं थीं। यह समस्या हमारे सामने चुनौती की तरह थी। ऐसे में सबके साथ मिलकर यह निर्णय लिया गया कि इस प्रशिक्षण में केजीबीवी परिसर में ही चल रही 'रमसा' (राजकीय माध्यमिक शिक्षा अभियान) की लड़कियों को भी शामिल कर लिया जाए जो कि इसी केजीबीवी से पढ़कर गई हुई हैं। इन लड़कियों को शामिल करते ही प्रशिक्षण में जान आ गई।

केजीबीवी की लड़कियाँ अपनी इन दीदियों के साथ मिलकर अच्छे से अपनी भागीदारी निभाएँ, इसके लिए यह व्यवस्था की गई कि ग्रुप वर्क के दौरान प्रत्येक समूह के साथ रमसा की एक या दो लड़कियाँ शामिल हों। इन लड़कियों ने भी स्वयं आगे न होकर केजीबीवी की लड़कियों को ही पहल करने के अवसर दिए, क्योंकि ये आपस में एक-दूसरे को भली-भाँति जानती है इसलिए इन्हें एक साथ काम करने में कोई परेशानी नहीं हुई। अब तक केजीबीवी की लड़कियों का संकोच भी जाता रहा और वे खुद भी आगे बढ़कर प्रशिक्षण में हिस्सा लेने लगी। यह अनुभव बहुत ही सीख देने वाला रहा।

प्रशिक्षण से बनी सीख : स्थिति के अनुसार लिये गए एक निर्णय ने हमें एक नए अनुभव से रूबरू करवा दिया। यहाँ काम करने के दौरान यह बात स्पष्ट हुई कि यदि कोई प्रशिक्षण वास्तविक स्थितियों के बीच डेमोन्स्ट्रेटिव मोड में किया जाए तो संभवतः उसके परिणाम सकारात्मक होते हैं।

केजीबीवी में जाकर जब प्रशिक्षण किया गया तो वहाँ उपस्थित सभी शिक्षिकाएँ व लड़कियाँ उसमें शामिल हो सकीं। इस दौरान केजीबीवी की वास्तविक स्थिति को भी नजदीक से जाना जा सका और सबके साथ एक सहज रिश्ता भी बना पाए। अगर यही प्रशिक्षण केजीबीवी के बाहर अन्य जगह पर होता तो पूरे लोग नहीं जुड़ पाते। साथ ही इसके फॉलोअप की प्रक्रिया में भी सिर्फ शिक्षिकाओं पर यह दबाव बना रहता कि वे अब तक जीवन कौशल के कितने मुद्दों पर लड़कियों के साथ समझ बना पाई है।

यहाँ प्रशिक्षण का उल्लेखनीय पक्ष ये रहा कि मुद्दों पर समूह कार्य करते समय प्रस्तुति के समय अपनी बात कह पाने, लीडरशीप रोल को चुनने व मदद लेने-देने जैसे कौशल का अभ्यास तो, मिला ही साथ ही ये कौशल मूर्त रुप में नजर भी आए।

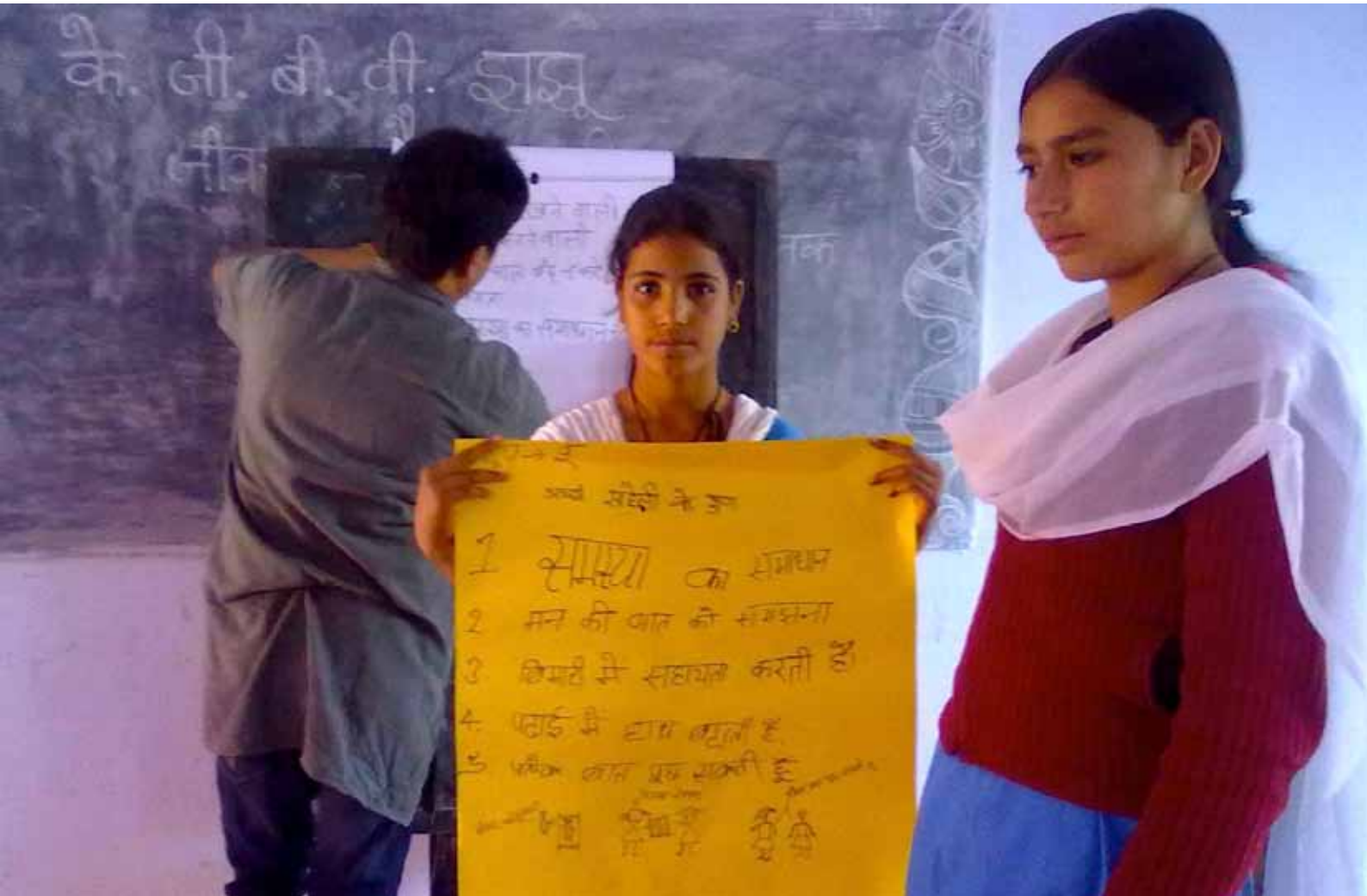

6
एक्सपोजर विजिट
गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की एक विधा

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों मे जो लड़कियाँ आती हैं वे कई तरह से वंचित पृष्ठभूमि से होती हैं। सबसे पहली वंचना तो लड़की होने की वजह से ही आ जाती है। इसके अलावा कुछ इसलिए स्कूल जाने से रोक दी जाती हैं कि अब स्कूल घर से ज्यादा दूरी पर है। गरीबी, जातीय, सांस्कृतिक व सामाजिक पृष्ठभूमि भी जहाँ एक ओर स्कूल के रास्ते की रूकावट के रूप में खड़े होते हैं वहीं वे इन लड़कियों की जिन्दगी को घर व गाँव तक ही सीमित करके दायरे खींच देते हैं। ये सामाजिक दायरे जहाँ इन्हें दुनिया से काटते हैं वहीं यह इनके लिए जानकारियों के वातायनों को बन्द करते हैं साथ ही नया सीखने व सोचने को भी बाधित कर देते हैं।

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों में आने के बाद ये लड़कियाँ एक तरह से उन दायरों व प्रक्रियाओं के ताने-बाने को काट नहीं पाएँगी जो फिर से उन्हें समाज में जाकर जकड़ने वाला है। यह जकड़न केवल गुणवत्तायुक्त शिक्षा से ही काटी जा सकती है।

गुणवत्तायुक्त शिक्षा से मायने यह हैं कि लड़कियाँ पढ़ना-लिखना तो सीखे हीं, इसी कौशल के बलबूते वे खुद ज्ञान का सृजन भी करें। इसके अलावा ज्ञान, जो संसार में सतत् रूप से बढ़ रहा है, उस तक पहुँच बना सके। ज्ञान के विस्तृत संसार तक अपनी पहुँच बनाने के कई उपक्रम हो सकते हैं। इनमें सबसे महत्पूर्ण है अपनी स्थिति, अपने दायरे व अपने स्थान से हट कर चीजों, लोगों व दुनिया को देखना व समझना। इसी उद्देश्य के मद्देनजर केजीबीवी में एक्सपोजर विजिट गतिविधि के रूप में उभर कर आती है।

एक्सपोजर की विधाएँ : लड़कियाँ अपने दायरे से बाहर निकल कर नया देखें व सीखें, इसके लिए कई तरीके हो सकते है। यह जरूरी नहीं कि सिर्फ लड़कियाँ बाहर किसी जगह पर घूम के आएँ तभी उन्हें एक्सपोजर मिलेगा। यह निम्नलिखित तरीकों से किया जा सकता है-

- ☐ जिले से बाहर भ्रमण करना।
- ☐ आस-पास की जगहों पर जाकर चीजों को देखना।
- ☐ केजीबीवी में ही कुछ विशेषज्ञ लोगों से मुलाकात करवाना।

केजीबीवी में अब तक एक्सपोजर विजिट का स्वरूप : केजीबीवी में एक्सपोजर विजिट लम्बे समय से सिर्फ एक यात्रा की तरह होती रही है। जिसका उद्देश्य मनोरंजन के रूप में ही देखा जाता है। कोई घूमने की जगह निश्चित कर दी जाती है। जो आमतौर पर अपने जिले से बाहर कोई धार्मिक स्थल ही होता है। यह विजिट आमतौर पर दो दिन की होती है। इस विजिट से लड़कियाँ बहुत उत्साहित रहती हैं। यह विजिट वर्ष में एक बार होती है।

इसमें क्या कुछ छूट जाता है : कोई भी गतिविधि शैक्षणिक तभी बन पाती है जबकि उसे शैक्षणिक गतिविधि के तौर पर नियोजित किया जाए। दूसरा इसके नियोजन व क्रियान्वयन की हर कड़ी में लड़कियों की भागीदारी हो। अक्सर यह दोनों ही कड़ियाँ छूट जाती हैं। जिससे यह शैक्षणिक गतिविधि न बन कर महज औपचारिकता बन कर रह जाती है।

एक्सपोजर विजिट को शैक्षिक प्रक्रिया बनाना : समय-समय पर प्रोजेक्ट टीम द्वारा अकादमिक सपोर्ट हेतु की गई विजिट्स में भ्रमण को एजुकेशनल एक्टिविटी के रूप में देखे जाने पर संवाद होता रहा है। संवाद के जरिये विजिट को शैक्षणिक बनाने हेतु जो कि इसका मूल उद्देश्य है, कुछ कारक तय किए हैं, जो इस प्रकार हैं-

- ☐ लड़कियों की सहभागिता से विजिट की योजना बनाना।
- ☐ कहाँ जाना चाहते हैं इस पर लड़कियों की सहभागिता से निर्णय लेना।
- ☐ क्यों जाना चाहते हैं, पहले उद्देश्य तय कर लेना।
- ☐ विजिट पर क्या देखेंगी, विजिट पर जाने से पहले लड़कियों के साथ चर्चा कर लेना।
- ☐ विजिट से आने के बाद विश्लेषण।

बीकानेर के केजीबीवी में एक्सपोजर से जुड़े कुछ अनुभव : बीकानेर सपोर्ट टीम ने केजीबीवी की लड़कियों के साथ जो गतिविधियाँ एक्सपोजर के तौर पर की उनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है-

1. एक्सपोजर : केजीबीवी के बाहर - क्रॉस लर्निंग : यह जरूरी नहीं कि हमेशा सिर्फ ऐतिहासिक स्थल पर ही घूमने जाया जाए। कई बार आस-पड़ोस की चीजें भी खूब सिखा जाती हैं। इसी के मद्देनजर क्रॉस लर्निंग की गतिविधि को प्लान किया गया। इस गतिविधि के तहत एक केजीबीवी की लड़कियों को दूसरे केजीबीवी की विजिट करवाई गई। इसका उद्देश्य था कि उन्हें एक-दूसरे के विचारों के आदान-प्रदान का मौका मिले और वे एक-दूसरे की व्यवस्थाओं को देख-समझ सकें।

इस एक्सपोजर को लड़कियों एवं शिक्षिकाओं के लिए सीखने की गतिविधि के रूप में नियोजन किया गया था। क्रॉस लर्निंग से पूर्व लड़कियों व शिक्षिकाओं ने आपस में चर्चा कर तय किया कि हमें वहाँ जाकर क्या-क्या देखना है, किन मुद्दों पर सवाल पूछने हैं, इत्यादि। इस गतिविधि के दौरान मेहमान व मेजबान दोनों ही केजीबीवी की लड़कियाँ उत्साहित नजर आईं। क्रॉस लर्निंग की गतिविधि के दौरान लड़कियों ने एक-दूसरे का अभिनन्दन किया। अपने-अपने केजीबीवी के बारे में चर्चा की। मेजबान केजीबीवी की लड़कियों ने मेहमान लड़कियों को केजीबीवी का भ्रमण करवाया और अपने यहाँ की व्यवस्थाओं की जानकारी दी। आपस में गीतों व अंग्रेजी के शब्दों की अन्त्याक्षरी, कबड्डी व खो-खो जैसे खेल भी हुए। शिक्षिकाओं ने भी आपस में चर्चा कर केजीबीवी प्रबन्धन को बेहतर बनाने में आने वाली समस्याओं को आपस में शेयर किया और एक-दूसरे के अनुभव से सीख ली।

जब हम पूगल गए तो हमने देखा कि वहाँ की लड़कियाँ अपने बर्तन माँज कर अच्छी तरह से रैक मे रखती है। हम सब तो अपने बर्तन अपने पास ही रखते हैं। इसलिए हर कमरे में बर्तन दिखते हैं। अब हम भी उनकी तरह अपने बर्तनों को अच्छी तरह जमाकर एक जगह ही रखेंगे। हमें उनके यहाँ जाकर बहुत अच्छा लगा, काश, कि हम सारे केजीबीवी की लड़कियों से वहाँ जाकर मिल सकें।

बसंती, कक्षा-8, केजीबीवी, जैतासर

अन्तर्राष्ट्रीय महिला एथलीट से मुलाकात : लड़कियाँ जिस पृष्ठभूमि से आती हैं वहाँ समाज में उनके सामने कोई रोल मॉडल नहीं होता है। केजीबीवी में आकर भी उनके सामने टीचर जरूर आदर्श रूप में होती हैं लेकिन इसके अलावा उन्हें अपनी जिन्दगी में क्या दिशा लेनी है इसके ज्यादा विकल्प नहीं होते हैं। इसलिए यह जरूरी होता है कि लड़कियाँ उन महिलाओं से मिलें जिन्होनें समाज में कुछ उल्लेखनीय काम किया हो।

दिनांक 11 अक्टूबर 2012 को अन्तर्राष्ट्रीय बालिका दिवस पर जयपुर में बालिका दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इसमें ओलम्पियन कृष्णा पूनिया, अध्यक्ष, राज्य महिला आयोग प्रोफेसर लाडकुमारी जैन एवं राजस्थान राष्ट्रीय बाल अधिकार सरंक्षण आयोग एवं सुरक्षा आयोग की अध्यक्ष दीपक कालरा से मिलवाया गया। कृष्णा पूनिया ने बालिकाओं को संदेश दिया कि महिलाएँ कमजोर नहीं हैं। उन्हें फिजिकल एक्टिविटी में ज्यादा जुड़ना चाहिए। स्पोर्टस् कैरियर के रूप में मद्दगार साबित हो सकता है। राजस्थान पुलिस (असिस्टेन्ट डायरेक्टर) कमाल ने महिला पुलिस की जानकारी देते हुए कहा कि हमें अपनी शक्ति को पहचानना होगा।

2. केजीबीवी के अन्दर एक्सपोजर के अवसर : कठपुतली चलाना : लड़कियों की अभिव्यक्ति को खोलने व उनमें सृजनशीलता बढ़ाने के लिए केजीबीवी में कठपुतली कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का संचालन गावणियार थार लोक कलाकार समिति, बीकानेर

के कलाकार माने खाँ व उनकी टीम ने किया। इस कार्यशाला में उन्होने लड़कियों को विभिन्न मुद्दों पर कठपुतली के माध्यम से प्रस्तुति देना सिखाया। कठपुतली का सांस्कृतिक महत्व बताने के साथ-साथ लड़कियों को कठपुतली की भी जानकारी दी गई।

जूडो-कराटे : वर्तमान में लड़कियों पर हो रही हिंसा को देखते हुए यह जरूरी हो जाता है कि उन्हें अपनी सुरक्षा के गुर आने ही चाहिए जिससे वे खुद को निर्भय व आत्मविश्वास से पूर्ण बना सकें। इसी उद्देश्य के तहत् लड़कियों को जूडो-कराटे का प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रशिक्षण में बालिकाओं ने पूरे जोश और उत्साह के साथ भाग लिया। प्रशिक्षण में आत्मरक्षा के साथ ही हमले का जवाब देने के गुर भी सिखाये गए।

डांस व नाट्य कार्यशाला : ये दोनों ही विधाएँ लोकप्रिय विधाएँ हैं। लड़कियाँ इन विधाओं को अपने कैरियर की संभावनाओं के तौर पर भी देखें। उनकी छुपी हुई प्रतिभा सामने आए एवं उन्हें विकास का अवसर मिले, इस उद्देश्य से केजीबीवी पूगल व दामोलाई में डांस व थियेटर कार्यशाला का आयोजन किया गया। ये कार्यशाला दिल्ली से आए विषय के विशेषज्ञों के निर्देशन में की गई। प्रत्येक केजीबीवी से 30-30 लड़कियों की भागीदारी इन कार्यशालाओं में रही। दस दिन की इस गतिविधि में लड़कियों को डांस व थियेटर का प्रशिक्षण दिया गया।

गुमसुम रहने वाली सुमन ने जब नाटक 'मिट्टी' में अभिनय किया तो पूरे विद्यालय ने खूब तालियाँ बजाई। नाट्य कार्यशाला ने उसकी और हमारी नाटक पर झिझक और अंतर को पूरी तरह से मिटा दिया।

रजनी कुमारी, उरमूल सीमांत

मीना मंच
1.
रेणु की माँ उसे विटामिन ए से भरपूर भोजन देने लगी कुछ महीने बाद रेणु को दिखाई देने लगी और स्वस्थ हो गई।
अंधेरे मे देखना
उनमें से एक बच्चा पानी की बाल्टी में हाथ डालने लगा
इससे हाथ नहीं धो पायेगा।
3.
नाम किरण लेखवाला
नाम नीतू वर्मा कक्षा 8th
नाम सुनिता

7
मीना मंच
अपनी बात कहने का मंच

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में आने वाली लड़कियाँ उन समुदायों या गाँवों के हिस्से से जुड़ी हैं जो कि पिछड़ा हुआ है। जिम्मेदारियों के कारण वे पढ़ाई से वंचित रह गईं या स्कूल तो गई परन्तु उनकी पढ़ाई बीच में ही छूट गई। केजीबीवी में इन लड़कियों को पढ़ने-लिखने व अपनी बात कहने, निर्णय लेने, खेल खेलने और नया करने के मौके उपलब्ध हो सके, इस उद्देश्य को लेकर हर केजीबीवी में मीना मंच का गठन किया गया है। यह मीना मंच लड़कियों का मंच है। जिसमें लड़कियाँ अपने आसपास के परिवेश से जुड़े समस्याग्रस्त पहलुओं को अपने वर्तमान सन्दर्भों से जोड़ कर देखती हैं व उन मुद्दों पर मिल कर चर्चा करती हैं। आपसी चर्चा के बाद वे मिलकर किसी एक नतीजे पर पहुँचती हैं, और साथ ही निर्णय में भागीदारी निभाती हैं। मीना मंच का उद्देश्य है कि -

- ☐ लड़कियों को ऐसा प्लेटफॉर्म मिले जिसमें वे अपने आपको प्रस्तुत कर सकें।
- ☐ लीडरशिप उभर सके और अन्य लड़कियों के साथ सामंजस्य बना सकें।
- ☐ किशोर आयु वर्ग की लड़कियों को अपनी जिज्ञासाओं को रखने का मंच मिल सके और उन जिज्ञासाओं पर काम हो सके।
- ☐ आपसी संवाद से जीवन के महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा कर सकें।
- ☐ लड़कियाँ अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो सकें।

यूनिसेफ द्वारा मीना मंच की थीम को तैयार किया गया है। इसके द्वारा यह उम्मीद की गई है कि बदलते परिप्रेक्ष्य में लड़कियों द्वारा अपनी बात कहने, सोच-विचार और सुरक्षात्मक तरीकों से निर्णय लिये जा सकेंगे।

कौन है मीना ? : मीना किसी जाति या धर्म विशेष की लड़की नहीं है। मीना किसी खास संस्कृति को प्रस्तुत नहीं करती और न ही किसी क्षेत्र विशेष की बात करती है। मीना एक किशोर उम्र की लड़की है जिसके मन में ढेरों सवाल हैं, जिज्ञासाएं हैं, उत्सुकताएं हैं। उसके जीवन में कुछ चुनौतियाँ हैं, जिससे वह जूझती है। अपने मन की बात सही तरीके से कहती है। अपनी जिन्दगी को नई दिशा देने में वह खुद की मदद करती है। मीना शिक्षा, स्वास्थ्य और जेण्डर जैसे मुद्दों पर सवाल उठाती है, सवालों के हल खोजती है और सीखती है।

केजीबीवी में भी मीना मंच किशोर उम्र की लड़कियों का समूह है। वैसे ही सवाल और जिज्ञासाएँ हैं जैसी कि मीना की हैं। मीना के सवाल लड़कियों को अपने सवाल लगते हैं और वे मीना से जुड़ जाती हैं और मीना जैसा बनने का प्रयास करती हैं। वास्तविक स्थिति में किशोर लड़कियों को अपनी बात कहने का माहौल और अभ्यास नहीं मिला है। इस स्थिति को ध्यान में रखकर ही शायद केजीबीवी में किशोर लड़कियों का समूह गठित किया गया है जिसे मीना मंच कहा गया है।

मीना मंच की भूमिका : केजीबीवी में मीना मंच की महत्वपूर्ण भूमिका है कि अध्ययनरत लड़कियाँ अपनी बात मंच के सामने रखें। केजीबीवी की छोटी-मोटी समस्याओं को हल करने में मदद कर सकें, साथी लड़कियों की मदद कर सकें।

मीना मंच लड़कियों को अपनी बात कहने, प्रतिनिधित्व करने एवं व्यवस्थाओं में अपनी भागीदारी दिलाने के लिए प्रेरित करता है।

मीना मंच का गठन : केजीबीवी में मीना मंच के गठन के लिए उन 15-20 लड़कियों का चुनाव किया जाता है जिनकी अभिव्यक्ति अच्छी हो, लीडरशिप हो और वे लड़कियों की समस्याओं को मंच के स्तर तक लाती हैं। इस में कक्षा - छह, सात और आठ की लड़कियों की भागीदारी होती है। सभी कक्षाओं से समान संख्या में लड़कियों की भागीदारी होती है। एक टीचर व्यवस्थित रूप से मंच की लड़कियों को चर्चा करने, समस्या का समाधान करने के लिए फैसिलिटेट करती है। हैड टीचर के सहयोग से निर्णय लिये जाते हैं।

बीकानेर केजीबीवी में मीना मंच को सक्रिय करने के तरीके : बीकानेर की पाँचों केजीबीवी में मीना मंच को सक्रिय करने के कई तरीके अपनाए गए। जिसमें किसी समस्या पर नाटक करके सभी लड़कियों के सहयोग से विकल्प तलाशने का काम किया गया। चित्रों और कहानियों के जरिये जिज्ञासाओं पर काम किया गया। जिससे टीचर्स व लड़कियाँ उत्साह से लबरेज़ नजर आती हैं। जब उनसे इस बात की जानकारी ली गई कि मीना मंच कैसा चल रहा है? लड़कियाँ इशारा करके बोलीं- ''गरिमा पेटी है न दीदी।''

गरिमा पेटी से समस्या की पहचान : यह उदाहरण केजीबीवी कक्कू का है। शैक्षणिक भ्रमण नहीं होने के कारण लड़कियाँ परेशान थीं कि भ्रमण अब तक क्यों नहीं हुआ और इसके क्या कारण हैं? ऐसा क्या किया जाए कि भ्रमण हो जाए। फिर क्या था मीना मंच की बबीता ने तुरन्त एक कागज पर लड़कियों की बात लिख डाली और गरिमा पेटी में डाल दिया।

कागज पर लिखा था - ''हमारा शैक्षणिक भ्रमण अभी तक नहीं हुआ है, फिर होली की छुट्टी आ जाएँगी, लड़कियाँ छुट्टी के बाद देरी से आती है और फिर परीक्षा नजदीक आ जाएगी। गर्मी भी अधिक हो जायेगी फिर कैसे जा पाएँगे?'' अगले दिन मीना मंच की बैठक के दौरान सुझाव पेटी की पर्चियाँ पढ़ी गई। चर्चा हुई और हैड टीचर आश्वस्त किया कि जल्दी ही भ्रमण का प्रयास किया जाएगा।

मंच बना अभिव्यक्ति का माध्यम : प्रारम्भ मे मीना मंच में लड़कियाँ अपनी बात ठीक तरीके से नहीं कह पाती थी, खास तौर पर नव प्रवेशित लड़कियाँ अपनी बात या दिक्कत बताते हुए झिझकती थीं। प्रत्येक केजीबीवी में यही समस्या सामने आ रही थी।

इस समस्या के लिए समाधान खोजा गया। लड़कियों से उनकी समस्या के आधार पर रोल प्ले तैयार करवाये गए। रोल प्ले की शुरूआत मीना किताबों से की गई। फिर उनकी समस्याओं को लेकर रोल प्ले प्रस्तुत किये गए। लड़कियों ने स्थानीय भाषा के संवादों के साथ अपनी बात कही और भावनाएँ जाहिर की। मीना मंच द्वारा उनकी समस्याओं को जानकर उनके विकल्प लड़कियों के बीच से खोजे गए और किसी एक विकल्प पर सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया।

नए नेतृत्वकर्ता तैयार करना : मीना मंच की बैठकों में आठवीं कक्षा की लड़कियाँ नेतृत्व करती हैं। जब वे आठवीं पास करके चली जाएंगी, तब मीना मंच का नेतृत्व कौन लड़कियाँ करेंगी? इस बात पर सोच-विचार कर कक्षा-सात और आठ की लड़कियों के बीच में विशेष रूप से जिम्मेदारी बांटी गई। नेतृत्व के रूप में मीना मंच की लड़कियों को जिम्मेदारी दी गई ताकि उनका शैक्षिक स्तर अच्छा हो सके। यह कार्य केजीबीवी जैतासर, पूगल और कक्कू में टीचर के सहयोग व मीना मंच की पहल से किया गया। केजीबीवी जैतासर में मीना मंच की पहल से लड़कियों की खो-खो की टीम बनाई गई और यह टीम वर्तमान में सक्रिय है। मीना मंच के सहयोग से हो रहे काम लड़कियों की अभिव्यक्ति, नेतृत्व कौशल का विकास तो कर ही रहे हैं पर कुछ चुनौतियाँ भी हैं जो कि निम्न हैं-

चुनौतियाँ

- ☐ मीना मंच में लड़कियों की भागीदारी तय है, पर यह रोटेट नहीं है। यदि 15 या 20 लड़कियाँ मंच में हैं तो उन्हें ही मौके उपलब्ध हैं। बाकी लड़कियों को लीडरशिप के मौके उपलब्ध नहीं होते।
- ☐ मीना मंच के द्वारा जो कार्य किये गए हैं, वह किसी फाइल या रजिस्टर में दर्ज किये जाएँ। जिससे यह पता लग सके कि लड़कियों की कितनी बातें, जिज्ञासाएँ और समस्याएँ सामने आई। किस-किस पर चर्चा की गई व खोज कर हल ढूँढ़ा गया या समाधान किया गया।
- ☐ मीना मंच का एक स्वचालित मंच के रूप में प्रतिष्ठित न हो पाना।
- ☐ इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि सतत् चुनौतियाँ बने रहने के बावजूद भी मीना मंच मजबूत अभिव्यक्ति व लीडरशिप को बढ़ाने का सशक्त माध्यम है।

8

विद्यालय प्रबन्धन समिति

सक्रिय भागीदारी से ही बेहतर शिक्षा

सरकार ने शैक्षणिक स्थिति में बेहतरी हेतु समुदाय की भागीदारी की अनिवार्यता को समझते हुए चुने हुए प्रतिनिधियों एवं अभिभावकों के सीधे-सीधे हस्तक्षेप को सुनिश्चित करने के लिए समय-समय पर कई प्रयास किए हैं, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण प्रयास रहा है विद्यालय प्रबन्धन समिति - एस.एम.सी. का गठन।

स्कूल में स्थानीय समुदाय की भागीदारी को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 की धारा 21 में विद्यालय प्रबन्धन हेतु विद्यालय प्रबन्धन समिति के गठन का प्रावधान किया गया है। विधेयक की धारा-21 की मंशा के अनुसार अब विद्यालय विकास एवं संचालन की सम्पूर्ण जिम्मेदारी विद्यालय एवं अभिभावकों के हाथ में दे दी गई है ताकि प्रत्येक अभिभावक में विद्यालय के प्रति अपनत्व की भावना का विकास हो सके। विद्यालय प्रबन्धन समिति के गठन के मूल में है कि समुदाय की भागीदारी होने पर ही शिक्षा में बेहतरी हो सकती है। इसमें स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों के अध्यापकों स्वयं बच्चों, जन प्रतिनिधियों एवं स्कूल के हैड टीचर एवं महिलाओं की भागीदारी की अनिवार्यता है।

एस.एम.सी. की केजीबीवी में भूमिका : केजीबीवी के संदर्भ में देखें तो एस.एम.सी. का रोल बेहद महत्वपूर्ण है, अतः एस.एम.सी. की जिम्मेदारी है कि वे लड़कियों को शिक्षा से जोड़ने, नामांकन में वृद्धि, शैक्षणिक स्थिति का जायजा लेना, लड़कियों की सुरक्षा का विशेष ध्यान रखते हुए शैक्षणिक व भौतिक स्थिति में सुधार लाने के लिए निरन्तर प्रयासरत रहें। चूंकि केजीबीवी पूर्णतया आवासीय है और ऐसे में अगर केजीबीवी की व्यवस्थाएं बिगड़ जायें तो लड़कियों की शैक्षणिक स्थिति व सुरक्षा पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसलिए केजीबीवी में एस.एम.सी. का रोल बेहद महत्वपूर्ण नजर आता है ताकि व्यवस्थाएं सुचारू रूप से चल सकें। प्रोजेक्ट के अन्तर्गत बीकानेर के केजीबीवी में जब काम की शुरूआत की थी तब से ही एस.एम.सी. की सक्रिय भागीदारी को सुनिश्चित करने के प्रयास निरन्तर रूप से किये जा रहे है केजीबीवी में सबसे पहले एस. एम.सी. की स्थिति को जाना गया। केजीबीवी में जब एस.एम.सी. की स्थिति के बारे में चर्चा की गई तो पांचों केजीबीवी की शिक्षिकाओं का यही कहना था कि हमारे यहाँ पर एस.एम.सी. बैठकें नियमित नहीं होती हैं क्योंकि एस.एम.सी. सदस्य बार-बार बुलाने पर भी नहीं आते हैं।

शिक्षिकाओं के इस सोच में बदलाव लाने एवं एस.एम.सी. को सक्रिय करने हेतु कुछ प्रक्रियाओं को अपनाया जिसके कारण आज बीकानेर केजीबीवी में एस.एम.सी. की सक्रिय भागीदारी दिखाई देने लगी है। वे कुछ प्रक्रियाएं इस प्रकार से थी-

- शिक्षिकाओं के साथ नियोजन : एस.एम.सी. को सक्रिय करने में सबसे पहली आवश्यकता महसूस हुई कि शिक्षिकाओं के सोच को सकारात्मक किया जाए। इसके लिए शिक्षिकाओं के साथ लगातार बैठकें की गई। बैठकों में एस.एम.सी. की स्थिति एवं बैठकों को नियमित करने हेतु चर्चा की गई। शिक्षिकाओं के साथ व्यवस्थित नियोजन किया गया। पांचों केजीबीवी के एस.एम.सी. सदस्यों की सूची ली गई।

विद्यालय प्रबन्धन समिति में

महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना

एस.एम.सी. सदस्यों के साथ संवाद कायम होना : शिक्षिकाओं के साथ किये नियोजन के अनुसार प्रोजेक्ट टीम के सदस्यों ने केजीबीवी के एस.एम.सी. सदस्यों से सम्पर्क किया। उनसे निरन्तर सम्पर्क के माध्यम से संवाद स्थापित किया। उनको बैठकों में नियमित रूप से भाग लेने हेतु प्रेरित किया गया। साथ ही शिक्षिकाओं के साथ मिलकर केजीबीवी में होने वाली प्रत्येक गतिविधियों में आमंत्रित किया गया। जिससे इन सदस्यों का रुझान केजीबीवी में बढ़ता हुआ नजर आया। प्रोजेक्ट टीम द्वारा समुदाय के साथ आयोजित होने वाली प्रत्येक गतिविधियों जैसे मोटीवेशन कैम्प, दादी-नानी दिवस, अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस, अभिभावक बैठक में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने हेतु केजीबीवी एवं समुदाय स्तर पर भाग लिया गया। साथ ही यह कोशिश की गई कि महिलाओं का आत्मविश्वास बढ़े। इन गतिविधियों का व्यवस्थित प्लान शिक्षिकाओं के साथ किया गया। महिलाओं को केजीबीवी का अवलोकन करवाकर व्यवस्थागत जानकारी दी गई। इन गतिविधियों में स्वयं लड़कियों ने अपने सीखने के अनुभव को बाँटा। इन गतिविधियों में भी एस.एम.सी. को चर्चा का मुद्दा बनाया गया। एस.एम.सी. बैठकों में भाग लेने हेतु महिलाओं को प्रेरित किया गया। इससे उनका हौसला बढ़ा और वे एस.एम.सी. बैठकों में भाग लेने लगीं।

एस.एम.सी. के पुनर्गठन में मदद : बीकानेर के केजीबीवी में महिलाओं एवं केजीबीवी के कार्यों में रुचि रखने वाले लोगो को शामिल करने हेतु एस.एम.सी. के पुर्नगठन पर शिक्षिकाओं एवं एस.एम.सी. सदस्यों के साथ मिलकर चर्चा की गई।

जन्नत बानो बनी एस.एम.सी. अध्यक्ष : केजीबीवी कक्कू में लम्बे समय से एस.एम.सी. अध्यक्ष (मोहन राम) पुरुष ही थे। एस.एम.सी. की बैठको मे शामिल होने वाली महिलाओं ने एस.एम.सी. अध्यक्ष को बदलने की मांग की। हालांकि पूर्व अध्यक्ष इसके सख्त खिलाफ थे कि कोई महिला अध्यक्ष बने। उनका मानना था कि महिला इस पद पर बेहतर काम नहीं कर सकती। महिलाओं ने कहा कि इस बार अध्यक्ष किसी महिला को ही बनाया जाए और वह बेहतर काम करके दिखाएँगी। सभी ने आपस में मिलकर तय किया कि एस.एम.सी. का पुनर्गठन किया जाए। शिक्षिकाओं द्वारा आम सभा की तारीख को समाचार पत्र मे छपवाया गया। तय की गई 5 तारीख को आम सभा बुलवाई गई। सभी की सहमति से श्रीमती जन्नत बानो को एस.एम.सी. का अध्यक्ष चुना गया। श्रीमती जन्नत बानो ने पद ग्रहण करने के साथ ही विद्यालय विकास में सभी के सहयोग का निवेदन किया, जिससे कि विद्यालय विकास में मदद मिले।

- **नियमित बैठकों का आयोजन :** शिक्षिकाओं के साथ मिलकर कोशिश की गई कि केजीबीवी में एस.एम.सी. बैठकें नियमित हों। शिक्षिकाओं के साथ एस.एम.सी. सदस्यों से बातचीत की गई। सदस्यों के काम और भूमिका पर गहराई से चर्चा की गई। बैठकों में उनको यह अहसास दिलवाया गया कि केजीबीवी की बेहतरी में उनका महत्वपूर्ण रोल है। शुरूआती बैठक एस.एम.सी. सदस्यों को मजबूती देने का एक सशक्त माध्यम बनी।
- **केजीबीवी की समस्याओं पर चर्चा करना :** एस.एम.सी. की बैठकों में केजीबीवी की ऐसी समस्याओं को रखा गया जिनका समाधान स्वयं शिक्षिकाओं द्वारा नहीं हो पा रहा था। स्वयं एस.एम.सी. सदस्यों ने उन समस्याओं का समाधान स्थानीय स्तर पर किया। इससे स्वयं उनको भी मजबूती मिली और उनके एवं शिक्षिकाओं के साथ एक अच्छा रिश्ता कायम हुआ।
- **छात्रा सदस्य की भूमिका :** एस.एम.सी. में छात्रा सदस्य की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वह विद्यालय में अन्य छात्राओं की समस्याओं या सुझावों को बैठक के दौरान सभी के सामने रखती है तथा शिक्षण से जुड़ी समस्याओं को भी बताती है। इन समस्याओं का पता लगाने के लिए मीना मंच की बैठक के दौरान सभी के कार्यों की समीक्षा की जाती है। कहाँ-कहाँ दिक्कतें महसूस हो रही है तथा इस समस्या का समाधान कैसे निकाला जा सकता है? इसमें भौतिक सुविधाओं, भोजन तालिका व विद्यालय में आयोजित होने वाले समारोह आदि शामिल होते हैं। एस.एम.सी. बैठक के दौरान लिए गये निर्णयों को छात्रा सदस्य द्वारा सभी छात्राओं के साथ साझा किया जाता है। जिससे कि शिक्षण की गुणवत्ता बढ़ सके।

मिलकर खोजा रास्ता : केजीबीवी पूगल में पानी की समस्या थी। बार-बार टेंकर से पानी मंगवाना पडता था। इसमें पैसा और श्रम दोनों ही लगता था। इस समस्या को बाल शैक्षिक मेले में "मन की बात" पेटी के माध्यम से लड़कियों ने विधायक के नाम पत्र में लिखकर दिया। लेकिन फिर भी समाधान नहीं हो सका। लड़कियों ने आपस में चर्चा की, कि इस समस्या का समाधान एस.एम.सी. की बैठक के दौरान ही निकल सकता है। सदस्य छात्रा ने एस.एम.सी. बैठक के दौरान सभी छात्राओं की ओर से समस्या रखी। बजट का अभाव होने के कारण सदस्यों व शिक्षिकाओं ने अभिभावक बैठक का आयोजन किया तथा अभिभावकों के सामने पानी की समस्या की बात रखी। बैठक में सर्व सहमति से यह निर्णय लिया गया कि बोरवेल लगवाया जाये जिसके लिए जन सहयोग द्वारा पैसा इकट्ठा किया गया और बोरवेल लग गया, अब हमेशा के लिए पानी की समस्या का समाधान हो गया है।

- **केजीबीवी से जुड़ाव :** केजीबीवी में आयोजित होने वाली गतिविधियों में सतत् रूप से यह प्रयास किया गया कि एस.एम.सी. सदस्य इनसे जुड़े। जिससे उनमे केजीबीवी के प्रति अपनत्व की भावना आए। 26 जनवरी, 15 अगस्त, अभिभावक बैठक, खेल प्रतियोगिता, विज्ञान मेला, बाल शैक्षिक मेला व अन्य महत्वपूर्ण तिथियों में मनाये जाने वाले उत्सव में उनकी भागीदारी को सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया।

कुछ असर ऐसे भी

केजीबीवी में शुरूआत में एस.एम.सी. की बैठकें नियमित नही होती थी। सदस्यों को नियमित बैठक न करने के कारणों को जानने के लिए उनके साथ निरन्तर बातचीत की गई, लगातार यह कोशिश की गई कि वे केजीबीवी की गतिविधियों से जुड़ें। इसके लिए शिक्षिकाओं से आग्रह किया कि वे केजीबीवी में होने वाली प्रत्येक गतिविधि में एस.एम.सी. अध्यक्ष को आमन्त्रित करें। धीरे-धीरे केजीबीवी से उनका जुड़ाव बनने लगा। वे स्वयं चाहने लगे एस.एम.सी. की बैठके नियमित हों जिससे केजीबीवी मे आने वाली समस्याओं का निराकरण हो सके। उन्होने अन्य सदस्यों को भी बैठकों हेतु प्रेरित किया। इसके अलावा केजीबीवी में जिस चीज की कमी है, उसकी तरफ भी बाकी सदस्यों का ध्यान आकर्षित किया।

शुरूआत में एस.एम.सी. की बैठकों में केवल भौतिक सुविधाओं पर ही चर्चा की जाती थी। जैसे-जैसे बैठकों की नियमितता बढ़ती गयी तो सदस्यों की सोच में भी बदलाव आया। आज वे न केवल भौतिक सुविधाओं पर ही चर्चा करतें है बल्कि लड़कियों की प्रोफाइलों को देखकर उनकी शैक्षणिक स्थिति, बाल विवाह, बाल-सुरक्षा जैसे मुद्दों पर भी चर्चा करते है। नामांकन में वृद्धि को लेकर शिक्षिकाओं के साथ मोटिवेशन कैम्प में जाकर लोगों को शिक्षा के प्रति जागरूक करने और बालिकाओं का दाखिला करने जैसे कार्य भी एस.एम.सी. सदस्यों द्वारा किया जाने लगा है।

स्कूल की छुट्टियाँ होने पर सभी लड़कियाँ अपने घर चली जाती हैं पर समस्या थी उनके वापिस लौटने की। छुट्टियाँ खत्म होने के पश्चात् लड़कियाँ वापिस आने में 15 दिन से 1 माह लगा देती थी, जो शिक्षिकाओं के सामने एक बडी चुनौती थी। किसी दिन चार तो किसी दिन दो लड़कियाँ आती थी अतः शैक्षणिक स्थिति पर बुरा प्रभाव पड़ता था। जो लड़कियाँ समय पर आ जाती थीं उनकी पढ़ाई में भी बाधा और जो देरी से आती थीं वह सिलेबस में पीछे छूट जातीं। अतः दोनों के शैक्षणिक स्तर में अन्तराल आ जाता था। एस.एम.सी. मीटिंग के दौरान यह समस्या सदस्यों के सामने शिक्षिकाओं द्वारा रखी गई। सवाल यह हुआ कि ऐसा क्या किया जाए कि लड़कियाँ निर्धारित समय पर स्कूल वापिस आ जाएं।

गहनतम मंथन के पश्चात् सदस्यों ने अभिभावक बैठक के दौरान बात रखी कि किस तरह हम अपनी बेटियों की पढाई में बाधक बन रहे हैं। अगर हम निर्धारित तारीख को अपनी लड़कियों को वापिस केजीबीवी में लाएं तो उनके शैक्षिक स्तर में बढ़ोतरी होगी तथा शिक्षिकाओं को भी परेशानी नहीं होगी। सदस्यों ने अभिभावकों को बाल सुरक्षा संधारण रजिस्टर दिखाया जिसमें लड़की के घर जाने व वापिस आने की तारीख अंकित थी। वह कितनी बार घर गई तथा कितने अन्तराल के बाद घर से वापिस आई। इस बीच उसकी पढ़ाई का कितना नुकसान हुआ। इस बात को अभिभावकों ने स्वीकारा व विश्वास दिलाया कि चाहे घर पर कितना भी जरूरी काम क्यों न हो हम लड़कियों को घर पर रोक कर नहीं रखेंगे व तुरन्त स्वयं केजीबीवी में छोड़ने आयेंगे। हमारे लिए पहली प्राथमिकता हमारी बेटियों की पढ़ाई है।

इसका प्रभाव यह रहा कि छुट्टियाँ खत्म होते ही सारी लड़कियाँ केजीबीवी में उपस्थित हो जाती हैं। शैक्षणिक सत्र के दौरान बीच-बीच में भी छुटिट्याँ नहीं लेती है, जिससे उनके शैक्षणिक स्तर में सुधार स्पष्ट रूप से नजर आता है।

9
सीखने-सिखाने का अलग अंदाज
चिट्ठी-पत्री

आज के बदलते युग ने पत्र से लोगो का जुड़ाव बहुत ही कम कर दिया है। मोबाइल ने इन सभी चीजों को बहुत दूर कर दिया है। पुराने जमाने में तो इन्तजार रहता था चिट्ठी आने का, वह अब कम हो गया है। आज की नई पीढ़ी को पता ही नहीं है कि चिट्ठी कैसे लिखी जाती है। लेकिन हमने सोचा क्यों न इस सिलसिले को जारी रखा जाए। इससे लड़कियाँ चिट्ठी लिखना तो सीखेंगी ही साथ ही हिन्दी शिक्षण पर भी काम हो जाएगा। वह पत्र के माध्यम से हिन्दी लिखना वाक्य बनाना तथा अपने मन की बात पत्र के माध्यम से लिख सकेंगी। साथ ही साथ हिन्दी की मात्रा व अशुद्धियों पर भी काम हो जाएगा।

सभी केजीबीवी में यह प्रक्रिया अपनाई गयी। सभी लड़कियों से बातचीत की गई कि चिट्ठियाँ कितने प्रकार की होती है। चिट्ठी को और क्या कहते हैं। इसके पर्यायवाची पर भी काम हुआ। पुराने जमाने मे जब किसी को संदेश भेजना होता था तो वे लोग क्या करते थे, आदि...।

अब लड़कियों को चिट्ठी लिखने का तरीका सिखाया कि आपस में एक-दूसरे को चिट्ठी लिखो, अपनी मैडम को चिट्ठी लिखो। अब चिट्ठी लिखने का सिलसिला शुरू

हुआ। लड़कियाँ बहुत उत्साहित थी। इससे लिखने का उत्साह बढ़ा अब बारी थी चिट्ठियाँ दूसरे केजीबीवी कैसे भेजी जाएँ? पाँचो केजीबीवी की लड़कियाँ खेल-कूद क्रॉस लर्निंग एवं मीना मंच इत्यादि गतिविधियों के माध्यम से एक-दूसरे की सहेली बन गई थी। अब अपने हाल-चाल दूसरी केजीबीवी मे कैसे भिजवाएँ यह उनके सामने एक चुनौती थी। फोन पर बात करना सम्भव नहीं था।

लड़कियों ने अपनी समस्या हमारे सामने रखी कि "दीदी अन्य केजीबीवी में हमारी सहेलियाँ बन गई हैं। अब हम अपने मन की बातें उन तक कैसे पहुँचाएँ?" इस पर हमने कहा - "बस इतनी सी बात है, आप अपनी सहेली को चिट्ठी लिखो, हम सभी केजीबीवी मे जाते हैं, आपकी चिट्ठी आपकी सहेली तक पहुँच जाएगी।"

इतना सुनते ही लड़कियों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा, बस झट से चिट्ठियाँ लिख डाली और दीदी के हाथ में थमा दी। अब दीदी डाकिया बन चुकी थी। जिस केजीबीवी मे जाती, लड़कियाँ जाते ही पूछती-"दीदी हमारी सहेली ने चिट्ठी भेजी है क्या?" चिट्ठियाँ पाकर लड़कियों की खुशी का ठिकाना नहीं रहता। सारी लड़कियाँ एक जगह एकत्र हो जाती और चिट्ठी मे क्या लिखा है, यह जानने के लिए उत्सुक होती। अगले ही पल चिट्ठी के जवाब में चिट्ठी अपनी सहेली को गिफ्ट के साथ भेजती। इस गतिविधि से पढ़ना-लिखना तो होता ही, साथ ही एक नई ऊर्जा भी उत्पन्न होती है। हिन्दी के साथ-साथ कुछ लड़कियाँ मैसेज की भाषा में अंग्रेजी में भी चिट्ठियाँ लिखती हैं। उदाहरण के लिए जैतासर की पायल जो कि हिन्दी लिखने-पढ़ने से कतराती थी, आज अंग्रेजी में चिट्ठी लिखती है।

10

बाल सुरक्षा

लड़कियों की सुरक्षा हम सब की जिम्मेदारी

अभिभावक जब केजीबीवी में लड़कियों का नामांकन करवाने के लिए आते हैं, तो उनके मन में अनेक सवाल होते है कि उनकी लड़की कैसे रहेगी? वे चाहते है कि उसको एक स्वस्थ्य व सुरक्षित वातावरण मिले ताकि उसके जो सपने है वे एक सुरक्षित वातावरण में रहते हुए आसानी से पूरा हो पायें। शिक्षिकाओं का भी यही प्रयास रहता है कि वे अभिभावकों को लड़कियों की सुरक्षा को लेकर संतुष्ट कर सके।

लड़कियों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए सर्व शिक्षा अभियान ने उरमूल तथा प्लान के सहयोग से समय-समय पर जिला, ब्लॉक व केजीबीवी स्तर पर बाल संरक्षण कार्यशालाओं का आयोजन किया गया है ताकि वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो सकें व अपनी बात को आसानी से कह सकें।

इसके लिए विभिन्न विधाओं का प्रयोग किया गया बाल संरक्षण कार्यशाला के दौरान ''चुप्पी तोड़ो'' फिल्म दिखाई गई जिसमें बच्चों के साथ होने वाले शारीरिक, मानसिक व यौनिक शोषण के बारे में विस्तार से बताया गया, कि अगर आपका किसी भी तरह का शोषण हो रहा है तो ऐसी स्थिति में हमें 'ना' कह कर भाग जाना चाहिए व जिसे आप अपनी बात कह सकते है उससे तुरन्त कहें और तब तक कहते रहें जब तक समस्या का समाधान न निकले। जब तक हम चुप्पी नही तोड़ेंगे तब तक हम डर में ही जीते रहेगें अतः ''डर से डरना छोड़ो व बाल अधिकारों से नाता जोड़ो'' का संदेश दिया गया।

राज्य और जिला स्तर पर बच्चों से लैंगिक हिंसा को रोकने के लिए चलाये गए अभियान 'जाबोक' अर्थात जानो बोलो करो में भी बालिकाओं को प्रतिभागियों के रुप में शामिल किया गया। इन सबके साथ ही मीना मंच की बैठक के दौरान चर्चा, नाटक के माध्यम से जागरुकता तथा रिसोर्स टीम के द्वारा जानकारी देने जैसी गतिविधियां नियमित रुप से की गईं। इन सभी विधाओं के माध्यम से इतना परिर्वतन आया है कि अब लड़कियाँ इन मुद्दों पर खुलकर चर्चा करने लगी है। अपने नाटकों के माध्यम से, उन्होने ये संदेश ब्लॉक, जिला, संभाग व राज्य स्तर तक फैलाया है और अपनी एक अलग पहचान बनाई है।

केजीबीवी में लड़कियों की सुरक्षा एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। इस मुद्दे को केजीबीवी और जिला प्रबंधन के लोग भी बेहद गंभीरता से लेते हैं। चौबीस घंटे चौकीदार की नियुक्ति के अलावा केजीबीवी में लड़कियों की सुरक्षा को लेकर शिक्षिकाएं व्यक्तिगत तौर पर जिम्मेदारी लेती हैं। केजीबीवी में प्रवेश करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वे अभिभावक हो या अधिकारी सभी के लिए समान नियमों को लागू किया गया है। साथ ही इन नियमों का पालन हो इस बात का शिक्षिकाएं तो ध्यान रखती ही है, लड़कियाँ खुद भी अनुचित समय पर केजीबीवी में आने वाले व्यक्तियों को रोक देती हैं।

शैक्षणिक भ्रमण के दौरान भी बाल सुरक्षा को ध्यान में रखा जाता है। इस दौरान अभिभावकों की सहमति, सभी लड़कियों का बीमा, स्वास्थ्य किट, ठहरने के लिए सुरक्षित स्थान, बस का चयन तथा साथ ही अन्य व्यवस्थाओं के लिए चौकीदार व संदर्भ व्यक्ति भी साथ में जाते हैं, ताकि लड़कियों को किसी प्रकार की तकलीफ न हो और वे सुरक्षित रहें। इस प्रकार के सुरक्षा नियमों से अभिभावक अपनी लड़कियों की सुरक्षा को लेकर आश्वस्त होते हैं।

यह सब इसलिए संभव हो पाया है क्योकि केजीबीवी प्रबंधन में सर्व शिक्षा अभियान के अधिकारियों व शिक्षिकाओं दोनों ने अपनी जिम्मेदारी के तौर पर इसे लिया है। साथ ही छोटे से छोटे मुद्दे को गम्भीरता से लेकर, आपस में विचार-विमर्श के माध्यम से, निर्णय लेने की प्रक्रिया को अपनाया है। इस प्रक्रिया में सर्व शिक्षा अभियान के प्रतिनिधि व शिक्षिकाएं एक टीम के रूप मे नजर आती हैं। अतः मॉनिटरिंग का स्वरूप भी बदला है, वे बच्चों की सुरक्षा व भौतिक साम्रगी को लेकर जो समस्याएं है उसको कैसे दूर किया जा सकता है, पर चर्चा करते हैं। प्लान की बाल सुरक्षा नीति को ध्यान में रखते हुए केजीबीवी स्तर पर बाल सुरक्षा कमेटी भी गठित की गई है। इसके माध्यम से लड़कियों की सुरक्षा का विशेष ध्यान रखा गया है। अभिभावक बैठक व एस.एम.सी. की बैठकों में भी बाल सुरक्षा व संरक्षण के मुद्दों पर बातचीत की जाती है। बैठक में सपोर्ट टीम के साथ मिलकर तय किया गया है कि केजीबीवी में बाल संरक्षण संधारण रजिस्टर बनाया जाये। जिसमें लड़कियों की पूरी जानकारी व अभिभावकों के फोटो लगाये गये हों, ताकि लड़की अपने अभिभावकों के साथ आने-जानें में सुरक्षित रह सकें। लड़कियों की सुरक्षा व अधिकारों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा हेल्प लाइन नम्बर व चाईल्ड हेल्प लाइन नम्बर 1098 प्रत्येक केजीबीवी में लिखवाये गये हैं। इसके साथ ही गरिमा पेटी भी उनके पास एक विकल्प है। लड़कियाँ जो बात कहने में झिझकती हैं, वे गरिमा पेटी के माध्यम से अपनी बात को कह सकें। स्वयं की सुरक्षा कैसे हो, इसके लिए सभी लड़कियों को जूड़ो-कराटे का प्रशिक्षण दिया गया हैं तथा सर्व शिक्षा अभियान का प्रयास है कि वे इसे सतत् बनाये रखेंगे।

"मैंने बाल संरक्षण कार्यशाला में सीखा कि लड़की कमजोर नहीं है तथा कोई यौन दुर्व्यवहार करे तो कैसे बचा जा सकता है।"

अनुराधा, केजीबीवी, कक्कू

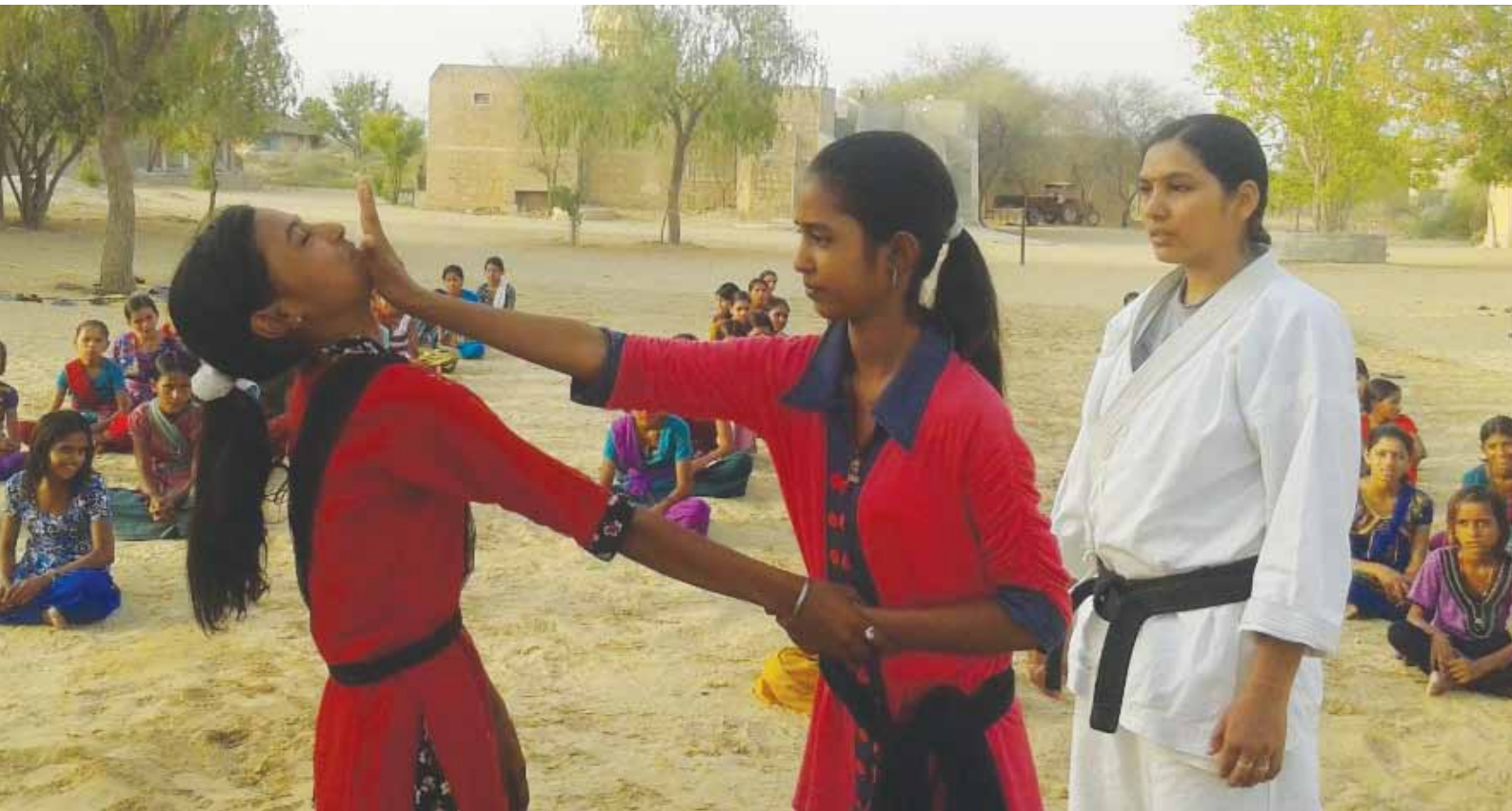

आपके नोट्स

प्लान इंडिया के सहयोग से उरमूल सीमांत, बज्जू और संधान जयपुर के द्वारा संयुक्त रुप से बीकानेर के सभी पाँचों कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालयों में ''गुणवत्तायुक्त शिक्षा'' सुनिश्चित करने हेतु परियोजना कार्यरत है। बालिकाओं के समग्र विकास के लिए शैक्षिणिक एवं सह-शैक्षिणिक गतिविधियों से सुदृढ़ करने का कार्य परियोजना के अंतर्गत किया जा रहा है।